॥ ॐ ॥

* श्री जिनायनमः *

(१) आवश्यकीय सूचना।

१. कविवर वृन्दावनजीकृत "श्रीवर्तमान चतुर्विंशतिजिन पूजा" तो कई स्थानों से कई कई बार प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु यह "पंचकल्याणक पाठ" आजतक कहीं से एकबार भी प्रकाशित नहीं हुआ है। इसलिये इसके प्रकाशित होने की भी आवश्यकता समझ कर कई जिनभक्त महानुभावों की प्रेरणा से हमने इसे प्रकाशित कराया है। आशा है कि श्रीजिनभक्त महानुभाव सर्व ही इस से बारम्बार पुण्योपार्जन कर परम लाभ उठाते रहेंगे॥

२. यह पाठ उपर्युक्त 'चौबीसी पूजा' से सर्वथा भिन्न नहीं है किन्तु उसी को कुछ परिवर्तित और हीनाधिक करके कल्याणक क्रम से लिखा गया है॥

३. "चौबीसीपूजा" में समुच्चय चौबीस जिन पूजा सहित सर्व २५ ही पूजा हैं किन्तु, इस "पंचकल्याणक पाठ" में सर्व १२१ पूजा हैं। अतः इस के अनुकूल जिनपूजन करना "विशेष पुण्य बन्ध" का कारण है॥

४. मूल पाठ में गर्भादि कल्याणकों की कुछ तिथियां अशुद्ध थीं, वे "श्रीउत्तर पुराण" आदि कई प्राचीन आर्षग्रन्थों से तथा उनही ग्रन्थों में दिये हुए पंचकल्याणक की मितियों के नक्षत्रों का भी तिथियों के साथ ज्योतिष शास्त्र के नियमानुकूल मिलान और भले प्रकार जांच करके "पूर्णतयः शुद्ध" कर दी गई हैं। आशा है कि श्री जिनभक्त महानुभाव सर्व इस लिखित और पूर्व प्रकाशित श्री चतुर्विंशतिजिन पूजा पाठों में पंचकल्याणक की अशुद्ध लिखी या छपी तिथियों को इस पाठ के अनुकूल "शुद्ध कर लेने का अवश्य २ कष्ट उठा कर स्वपर के लिये पुण्यप्राप्ति का कारण बनेंगे"॥

५. इस पाठ के साथ सुभीते के लिये हमने तीर्थंकरक्रम से और तिथिक्रम से दोनों प्रकार के पंचकल्याणक की तिथियों के दो अलग २ शुद्ध कोष्ठ भी नक्षत्रों सहित लगा दिये हैं। जो महानुभाव चाहें इन कोष्ठों को श्री उत्तरपुराणादि से स्वयम् भी जांच कर लें॥

६. नित्य पूजन के साथ किसी तीर्थंकर भगवान का पूजन करने के अभिप्राय से यह जानने के लिये कि आज की तिथि में किसी तीर्थङ्कर भगवान् का कोई कल्याणक हुआ है या नहीं और यदि हुआ है तो किसकिसका और कौन २ सा कल्याणक हुआ है अथवा 'पंचकल्याणक व्रत' करने में, दूसरा तिथि क्रमसे दिया हुआ कोष्ठ ही परमउपयोगी है॥

७. इन कोष्ठों में प्रत्येक तिथि के साथ जो नक्षत्र दिये गये हैं प्रायः वही नक्षत्र उन मितियों में सदैव आकर पड़ेंगे। केवल एक या दो नक्षत्र का आगा पीछा कभी २ होजाना सम्भव है॥

८. जिस जिस तिथि को किसी तीर्थंकर भगवान् का कोई कल्याणक हुआ हो उस उस तिथि को तिथि-क्रम-कोष्ठ से देख कर उनही तीर्थंकर के पांचों कल्याणक का (चौवीसी पूजा से देख कर) या कम से कम उन तीर्थंकर भगवान् के केवल उस तिथि में हुए एक या अधिक "कल्याणकों" का ही पूजन (इस पंच कल्याणक पाठ से) "नित्य पूजन के साथ" कर लेना विशेष पुण्योपार्जन का कारण है॥

९. दोनों कोष्ठों में जहां जहां एक साथ 'दो तिथियां' दी गई हैं वहां यह जानना चाहिये कि कल्याणक के दिन प्रातःकाल सूर्योदय से कम से कम ५ घड़ी ५५ पल तक तो पहिली तिथि थी, तत्पश्चात् दूसरी तिथि प्रारम्भ होकर उस कल्याणक के समय यह दूसरी तिथि ही विद्यमान् थी। इसी प्रकार जहां २ 'दो नक्षत्र' हैं वहां प्रातः काल सूर्योदय के समय तो पूर्व का नक्षत्र था और गर्भादि के समय दूसरा नक्षत्र था अथवा दोनों नक्षत्रों का सन्धिकाल था॥

१०. प्रथम कोष्ठ में तिथियों के साथ नक्षत्रों पर भी दृष्टि डालने से यह भी ज्ञात होगा कि केवल चार

तीर्थंकरों अर्थात श्री अर्हनाथ, मल्लिनाथ, नेमनाथ और महावीरस्वामी के अतिरिक्त शेष २० तीर्थंकरों में से प्रत्येक के "पांचों ही कल्याणकों के दिन एक ही नक्षत्र" आकर पड़ा है। और उन चारों तीर्थंकरों में भी श्री अर्हनाथ का केवल 'जन्म नक्षत्र', श्री मल्लिनाथ का केवल 'ज्ञान नक्षत्र', श्री नेमनाथ का केवल गर्भनक्षत्र, और श्रीमहावीर का केवल 'निर्वाण-नक्षत्र' ही बदला है। शेष चार चार कल्याणकों का इन चारों तीर्थंकरों का भी एक एक नक्षत्र ही है ॥

११. यह 'पंचकल्याणक पाठ' निम्न लिखित अवसरों पर विशेष उपयोगी होगाः—

(१) जैनधर्मानुकूल गर्भ-संस्कार कराते समय हवन और देवपूजनादिके अतिरिक्त 'चतुर्विंशतिजिनगर्भ-कल्याणक पूजन' करना।

(२) जन्म-संस्कार कराते समय "जन्मकल्याणक" पूजन करना।

(३) लिपिसंख्यान अर्थात् विद्यारम्भ संस्कार कराते समय "ज्ञान कल्याणक पूजन" करना।

(४) उपनीति (यज्ञोपवीत), व्रतचर्या, गृहीसिता, प्रशान्तता, गृहत्याग, आदि संस्कारों के समय 'तपकल्याणक' पूजन करना।

(५) समाधिमरण के समय तथा मृत्यु संस्कार कराते समय 'निर्वाण कल्याणक पूजन' करना।

(६) दीपमालिका विधान के अवसर पर निर्वाण लाड़ू चढ़ाते समय 'निर्वाणकल्याणक पूजन' करना।

(७) श्री महावीर जयन्ती के दिन 'जन्म कल्याणक पूजन' करना और किसी ही तीर्थंकर के निर्वाणोत्सव के समय "निर्वाणकल्याणक पूजन" करना, अथवा जिन तीर्थंकर भगवान का जन्मोत्सव या निर्वाणोत्सव किया गया हो कमसे कम उनही का 'निर्वाण कल्याणक पूजन' करना। इत्यादि ॥

(२) कविवर पं० वृन्दावन जी का परिचय।

(श्रीयुत पं० नाथूराम जी प्रेमी लिखित जीवनचरित्र के आधार पर)

१ जन्म'—इन का जन्म बनारस और आरा के मध्य शाहाबाद जिले के "बारा" नामक ग्राम में, जो गङ्गा नदी के तट पर बसा है, शुभ मिती माघ शु० १४ विक्रम सम्वत् १८४८ सोमवार को, पुष्य नक्षत्र, कन्या लग्न में, मकरसूर्य के २७वें अन्श पर शुभ मुहूर्त में हुआ। यह "अग्रवाल वंश" के 'गोयल' गोत्र में जन्मे थे ॥

२. कुल (वंश)'—इन का जन्म "अग्रवाल" वन्श के गोयल गोत्र में हुआ। यह काशी निवासी "बाबू धर्मचन्द्र" जी की धर्मपत्नी 'शिताब देवी' (सितावो) के गर्भ से उत्पन्न हुए। इनकी धर्मपरायणा सुशीला विदुषी स्त्री का नाम "रुक्मिणी" था जो काशी निवासी एक धनिक की पुत्री थी। "लालूबाबा" जिन के नाम से प्रसिद्ध एक बाग अब तक "बारा" ग्राम में विद्यमान है कविवर के पितामह थे जो बाबू सीताराम जी के पुत्र और "पं० खुशहालचंन्द्र" जी के पौत्र थे। 'बाबू महावीरप्रसाद' कविवर के लघुभ्राता थे जो सन्तान

वंश वृक्ष।

खुशहालचन्द्र
सीताराम
लालजी (लालबाबा)
धर्मचन्द्र
कविवर वृन्दावन — महावीरप्रसाद
(कविवर वृन्दावन के पुत्र:) अजितदास — शिखरचन्द्र
(अजितदास के पुत्र:) सुन्दरदास — पुरुषोत्तमदास — हरिदास
(पुरुषोत्तमदास:) शिरोमणि (पुत्री)
हनुमानदास — गुलाबदास — महताबदास — बुलाकचन्द्र

रहित स्वर्गवासी होगये। कविवर के दो पुत्र, 'अजितदास' और 'शिखरचन्द्र' थे जिन में से ज्येष्ठ पुत्र 'अजितदास' की सन्तान इस समय 'आरा' में विद्यमान है जहां इनके ज्येष्ठ पुत्र अजितदास का पाणिग्रहण बाबू 'मुन्नीलाल' की सुपुत्री के साथ हुआ था ॥

३. विद्याध्ययन—कविवर १२ वर्ष की वय तक तो "बारा" ग्राम ही में सामान्य रीति से कुछ विद्याध्ययन करते रहे पश्चात् जब सं० १८६० में उनके पूर्वज 'काशी' में आकर रहने लगे तो कविवर को यहां पण्डित सुखलाल जी सेठी, पण्डित काशीनाथ जी, आडूतराम जी, अनन्तराम जी, मूलचन्द्र जी आदि का अच्छा सत्संग मिला जिस से थोड़े ही समय में इन्हें जैनधर्म का अच्छा बोध होगया। कविवर अपने को 'पण्डित सुखलाल जी' का शिष्य बतलाते हैं। आप केवल १५ वर्ष की वय में ही हिन्दी भाषा में अच्छी कविता करने लगे थे। संस्कृत भाषा का बोध आप को सं० १८८० तक अर्थात् ३२ वर्ष की वय तक न था ॥

४. शरीर रचना—इन के शरीर का रङ्ग गेंहुआ और डीलडौल साधारण अर्थात् न लम्बा और न नाटा था ॥

५. पहनावा—देशी पाग, मिरज़ई और धोती, यह उनका साधारण पहनावा था, कभी कभी टोपी भी पहन लेते थे। किन्तु मृत्यु से पाँच छः वर्ष पूर्व से वे उदासीन वृत्ति में रहने लगे और इस लिये वस्त्रादि से ममत्व घटाते घटाते केवल एक चादर और कोपीन ही रखने लगे, जूता पहनना भी त्याग दिया ॥

६. खानपान—खान पान आप का युवावस्था में एक भङ्ग ग्रहण करने के अतिरिक्त सर्व प्रकार शुद्ध और साधारण था ॥

७. परोपकारता—आप बड़े दयालु हृदय और परोपकारी थे और आप को गुप्तदान करने में बड़ी

ख्याति थी, अनाथों और दीन दुखियों के आप परम बान्धव और बड़े शान्ति-स्वभावी थे ॥

८. देवाराधन और मंत्र-सिद्धी.—अपने पिता के समान आप 'पद्मावती देवी' के केवल भक्त ही नहीं थे किन्तु आपने उसे सिद्ध भी करली थी और मंत्र तंत्रादि पर भी आप की केवल गाढ़ श्रद्धा ही न थी वरन् बहुत से मंत्र यंत्रादि का संग्रह भी आप के पास था, जिन में से कई एक सिद्ध भी कर रखे थे। कविवर को निमित्तज्ञान (ज्योतिष, सामुद्रिक आदि) में भी कुछ अभ्यास था ॥

९. समकालीन जैन विद्वान—(१) जयपुर में "श्रीसर्वार्थ सिद्धि" और 'श्रीज्ञानार्णव' आदि अनेक ग्रन्थों के भाषा टीकाकार 'पंडित जयचन्द्रजी',

(२) पं० जय चन्द्रजी के पुत्र कवि वर नन्दलाल जी,

(३) पं० मन्नालाल जी,

(४) प्रजा के लिये जान देने वाले दीवान अमरचन्द्रजी,

(५) मथुरा में श्री आदि पुराण के संस्कृत टीका कार पं० चम्पारामजी,

(६) शेठ लक्ष्मी चन्द्र जी,

(७) प्रयाग में अजमेर निवासी श्रीयुत भट्टारक ललित कीर्त्ति जी, इत्यादि ॥

१० कवित्व शक्ति—कविवर कोई साधारण कवि नहीं थे। उन्हें जो कवित्व शक्ति प्राप्त थी तथा उनमें जो कवि-प्रतिभा थी वह किसी ग्रन्थाधार से नहीं और न किसी गुरु के द्वारा प्राप्त हुई किन्तु वह पूर्व जन्म के संस्कार से प्राप्त थी। अतः कहा जा सकता है कि कविवर 'जन्मसिद्ध कवि' थे। उन की कविता में स्वाभाविकता और सरलता बहुत पाई जाती है। कविवर ने गृहस्थ होने पर भी शृंगाररस में कभी अपनी कविता

नही रची किन्तु भक्तिरस और अध्यात्मरस या शांतिरस की ओर ही उन की चित्तवृति सदा लगी रही हिंदी भाषा में जितनी कविता देखी जाती हैं वह प्रायः दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय, कुंडलियां, कवित्त, सवैया आदि साधारण छंदों ही में पाई जाती हैं, परंतु 'कविवर वृन्दावन जी' लकीर के फ़कीर न थे। उन्हों ने अपनी रुचि के अनुसार संस्कृत भाषा में प्रचलित वसन्ततिलका, स्रग्धरा, आर्या, रथोद्धता, द्रुतविलम्बित, उपेन्द्र वज्रा, लक्ष्मीधरा आदि अनेक छन्दों का भी अपनी हिंदी भाषा कविता में बड़ी स्वतंत्रता के साथ उपयोग किया है और इसी लिये एक नवीन वस्तुके समान उनकी इसअपूर्व कविता का सर्व साधारण में सविशेष आदरहुआ है

११ ग्रन्थ रचना—कविवर रचित निम्न लिखित केवल ६ ग्रंथ इस समय प्राप्य हैं:—

(१) प्रवचनसार.—कविवर की रचना में ४२ वर्ष की कवित्व शक्ति और अनुभव के निचोड़ से परिपूर्ण यह अध्यात्म ग्रंथ सर्वोत्तम है जिसे आपने सम्वत् १८६३ में प्रारम्भ करके और तीन वार बड़े परिश्रम से ठीक करके अन्त में सम्वत् १९०५ में पूर्ण किया था। कविवर ने तीसरी वार यह ग्रंथ सम्वत् १९०४ के ज्येष्ठ मास में प्रारम्भ करके सं० १९०५की मिती वैशाख शु० ३ को लगभग १ वर्ष में समाप्त कर दिया। यह मूल ग्रन्थ प्रातःस्मरणीय 'श्रीकुंदकुंदाचार्य' रचित प्राकृत छंदों में है जिसके संस्कृत टीकाकार 'श्री अमृतचंद्रआचार्य' हैं। कविवरने इसे भाषा छंदवद्ध किया है। इस मूल ग्रंथकी अपूर्वता का अनुमान इससे भले प्रकार हो सकता है कि इसकी उत्तमता पर मोहित होकर "वम्बई यूनिवर्सिटी" ने अपने एम. ए. (M. A.) के कोर्स (पठनक्रम) में इसे स्थान दे रखा है। कविवर का किया छन्दवद्ध अनुवाद कितना उत्तम हुआ है यह वात उसे देखने ही से जानी जा सकती है। यह अनुवाद श्रीयुत पण्डित नाथूराम जी प्रेमी द्वारा वम्बई से प्रकाशित हो चुका है ॥

(२) चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा—कविवर ने यह भक्ति भाव पूर्ण सुप्रसिद्ध पूजन ग्रन्थ शुभ मिती कार्तिक कृ०३० (अमावस्या) सं० १८७५, गुरुवार को लिख कर समाप्त किया। जितने भाषा चौबीसी पाठ इस समय प्रस्तुत हैं उन सर्व में इसी का प्रचार अधिक है जिस से इसकी पद्य रचना के लालित्य का तथा उसकी उत्तमता और अनौपमता का पूर्ण प्रमाण मिलता है। कहते हैं कि पश्चिमदेशीय कुछ गायन प्रेमी जैन यात्रियों की 'भेलूपुरा' के श्री जैन मन्दिर में किसी नवीन "चतुर्विंशतिजिनपूजा" नृत्य गायन पूर्वक करने की बड़ी उत्कंठा देखकर कविवर ने इसे अपने पूर्व रचित "चतुर्विंशतिजिनपञ्चकल्याणक पाठ" में कुछ न्यूनाधिक करके केवल एक रात्रि में तईयार किया था। ऐसा भी कहा जाता है कि कविवर ने उस रात्रि को यात्रियों की इच्छानुसार शीघ्रता के कारण अपनी इस "चतुर्विंशतिजिनपूजा" ही को कुछ न्यूनाधिक करके और नवीन रूप में कल्याणक क्रम से लिखकर एक पञ्चकल्याणक पाठ तईयार कर दिया था॥

(३) तीस चौबीसी पाठ—इस ग्रंथ को कवि महोदयने सम्वत् १८७६ में शुभ मिती माघ शु० ५ को लग भग एक वर्ष में लिखकर पूर्ण किया॥

इस पाठ में अढ़ाई द्वीप के पांचों मेरु सम्बंधी जो ५ भरत और ५ ऐरावत क्षेत्र हैं उन सर्व की भूत भविष्यत और वर्तमान चौबीसियों अर्थात् दशों क्षेत्र की तीन तीन चौबीसियों—सर्व ३० चौबीसी—का पूजन संग्रह है। यह ग्रंथ "श्री जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता" द्वारा प्रकाशित हो चुका है॥

(४) छंद शतक—भाषा छंद शास्त्र का यह एक बड़ा उत्तम और अपने ढंग का सर्व से पहिला ग्रंथ है जिस में लग भग १०० प्रकार के छंदो के बनाने की बड़ी सरल विधि बतलाई गई है। कविवर ने इसे अपने सुपुत्र 'अजितदास' को पढ़ाने के लिये बनाया था जिस की रचना सं० १८९८ में शुभ मिती पौष कृ० १४ को आरम्भ करके शुभ मिती माघ कृ० २ को केवल १८ दिन में समाप्त कर दी। यह ग्रन्थ 'वृन्दावन विलास' में

श्रीमान "पं० नाथूराम प्रेमी" जी द्वारा प्रकाशित हो चुका है ॥

(५) अर्हत्पासा केवली—यह एक छोटा शकुनावली ग्रंथ है जिसकी रचना कविवर ने पं० विनोदी लाल कृत संस्कृत ग्रंथ के आधार पर की है। यह भी पं० नाथूराम जी द्वारा प्रकाशित हो गया है।

(६) वृंदावन विलास—यह निम्न लिखित १७ प्रकीर्णक (फुटकर) कविताओं का संग्रह है जो कविवर के संक्षिप्त जीवन चरित्र और "छंद शतक" सहित श्रीमान पं० नाथूराम जी प्रेमी द्वारा बम्बई में प्रकाशित हो चुका है:—

१. जिनेन्द्रस्तुति	२. जिन-वचन स्तुति	३. गुरुस्तुति
४. संकट मोचन स्तुति	५. पद्मावती स्तोत्र	६. भक्तभय-भंजन कल्याण कल्पद्रुम
७. अरहन्त स्तुति	८. आरतभंजन स्तोत्र	९. गुरु देव स्तुति
१०. श्रीपति स्तुति	११. लोकोक्तियुक्त जिनेन्द्रस्तुति	१२. पदावली
१३. वृन्दावन-देवीदास पदावली	१४. प्रकीर्णक	१५. अंतरलापिका प्रकरणाष्टक
१६. पत्र व्यवहार	१७. शील माहात्म्य	

इन १७ ग्रन्थों के अतिरिक्त कविवर रचित "समवशरण पूजा पाठ" और "वृहत्वर्तमानचौबीसीपाठ" नामक ग्रन्थों का भी उल्लेख मिलता है परंतु इन का कहीं पता अभी तक नहीं लगा। सम्भव है कि कविवर रचित यह दोनों ग्रन्थ तथा उनकी अन्यान्य रचनाऐं भी उन के वंशजों में से किसी के पास हों ॥

विनीत

बिहारीलाल जैन, सी. टी.

(बुलन्दशहरी)

(३) श्री तीर्थंकर क्रम से नक्षत्र सहित शुद्ध तिथिकोष्ट।

क्रम नं०	नाम तीर्थंकर	गर्भ तिथि व नक्षत्र	जन्मतिथि व नक्षत्र	तप तिथि व नक्षत्र	कैवल्यज्ञान तिथि व नक्षत्र	निर्वाण तिथि व नक्षत्र
१	श्री ऋषभदेव	आषाढ़ कृ० २ उत्तराषाढ़	चैत्र कृ० ९, उत्तराषाढ़	चैत्र कृ० ९, उत्तराषाढ़	फा० कृ० ११, उत्तराषाढ़	माघ कृ० १४, उत्तराषाढ़
२	श्री अजितनाथ	ज्येष्ठ कृ० ३० रोहिणी	माघ शु० १०, रो०	माघ शु० ९, रो०	पौष शु० ११, रो०	चैत्र शु० ५, रोहिणी
३	श्री संभवनाथ	फाल्गुन शु० ८ मृगशिरा	कार्तिक शु० १५, मृगशि०	मार्गशिर शु० १५ मृग०	कार्तिक कृ० ४, मृ०	चैत्र शु० ६, मृगशिरा
४	श्री अभिनन्दननाथ	वैशाख शु० ६ पुनर्वसु	माघ शु० १२, पुन०	माघ शु० १२, पुन०	पौष शु० १४, पुन०	वैशाख शु० ६, पुनर्वसु
५	श्री सुमतिनाथ	श्रावण शु० २ मघा	चैत्र शु० ११ मघा	वैशाख शु० ९, मघा	चैत्र शु० १०, मघा	चैत्र शु० १०, मघा
६	श्री पद्मप्रभु	माघ कृ० ६, चित्रा	कार्तिक कृ. १३, चि०	कार्तिक कृ. १३, चि०	चैत्र शु० १५, चि०	फाल्गुन कृ० ४, चित्रा
७	श्री सुपार्श्वनाथ	भाद्रपद शु० ६ विशाखा	ज्येष्ठ शु. १२, विशा०	ज्येष्ठ शु० १२, वि०	फा० कृ० ६, वि०	फाल्गुन कृ० ७, विशाखा
८	श्री चन्द्रप्रभु	चैत्र कृ. ५, अनुराधा	पौष कृ० ११, अनु०	पौष कृ० ११, अनु०	फा० कृ० ७ अनु०	फाल्गुन कृ० ७, अनुराधा
९	श्री पुष्पदन्त	फाल्गुन कृ० ९ मूल	मार्गशिर शु० १, मूल	मार्गशिर शु० १, मू०	कार्तिक शु० २, मू०	भाद्रपद शु० ८, मूल
१०	श्री शीतलनाथ	चैत्र कृ ८, पूर्वाषाढ़	माघ कृ० १२, पूर्वाषाढ़	माघ कृ० १२ पूर्वाषाढ़	पौष कृ० १४ पूर्वाषाढ़	आश्विन शु० ८, पूर्वाषाढ़
११	श्री श्रेयांसनाथ	ज्येष्ठ कृ० ६, श्रवण	फाल्गुन कृ० ११ श्र०	फा० कृ० ११, श्र०	माघ कृ० ३०, श्र०	श्रावण शु० १५, श्रवण
१२	श्री वासुपूज्य	आषाढ़ कृ० ६, शत०	फा० कृ० १४, शत०	फा० कृ० १४, शत०	माघ शु० २, शत०	भाद्रपद शु० १४, शत०

क्रम सं०	नाम तीर्थंकर	गर्भ तिथि व नक्षत्र	जन्मतिथि वनक्षत्र	तप तिथि व नक्षत्र	कैवल्यज्ञान तिथि व नक्षत्र	निर्वाण तिथि व नक्षत्र
१३	श्री विमलनाथ	ज्येष्ठ कृ० १०, उ० भाद्रपद	माघ शु. ४, उ. भा.	माघ शु. ४, उ. भा.	माघ शु. ६, उ. भा.	आषाढ़ कृ ८, उ. भा.
१४	श्री अनन्तनाथ	कार्तिक कृ० १, रेवती	ज्येष्ठ कृ. १२, रे.	ज्येष्ठ कृ १२, रे.	चैत्र कृ. ३०, रे.	चैत्र कृ. ३०, रेवती
१५	श्री धर्मनाथ	वैशाखशु. ८, पुष्य	माघ शु. १३. पु.	माघ शु. १३, पु.	पौष शु. १५, पु.	ज्येष्ठ शु. ४, पुष्य
१६	श्री शान्तिनाथ	भाद्रपद कृ. ७ भरणी	ज्येष्ठ कृ. १४, भर.	ज्येष्ठ कृ १३, भर.	पौष शु. १०, भर.	ज्येष्ठ कृ. १४, भरणी
१७	श्री कुन्थनाथ	श्रावण कृ. १० कृत्तिका	वैशाख शु. १, कृ	वैशाख शु. १, कृ.	चैत्र शु. ३, कृ.	वैशाख शु. १, कृत्तिका
१८	श्री अर्हनाथ	फाल्गुण शु० ३ रेवती	मार्गशिरशु. १४, रे.	मार्गशिर शु. १० रेवती.	कार्तिक शु. १२, रे.	चैत्र कृ. ३०, रेवती
१९	श्री मल्लिनाथ	चैत्रशु. १, अश्विनी	मार्ग. शिर शु. ११ अश्विनी	मार्ग. शु. ११ अश्वि.	पौष कृ. २, पुष्य	फा. शु. ५, अश्विनी
२०	श्री मुनिसुव्रतनाथ	श्रावणकृ. २, श्रवण	वैशाख कृ. १०, श्र.	वैशाख कृ. ९, श्र.	वैशाख कृ. ९, श्र.	फा. कृ. १२, श्रवण
२१	श्री नमिनाथ	आश्विन कृ. २ अश्विनी	आषाढ़ कृ. १० अश्विनी	आषाढ़ कृ० १०, आश्व.	मार्ग. शु. ११ अश्वि.	वैशाख कृ. १४, अश्विनी
२२	श्री नेमनाथ	कार्तिक शु. ६ उत्तराषाढ़	श्रावण शु. ६, चि.	श्रा. शु. ६, चि.	आश्विनशु. १, चि.	आषाढ़ शु. ७, चित्रा
२३	श्री पार्श्वनाथ	वैशाख कृ. २ विशाखा	पौष कृ. ११, वि.	पौष कृ. ११, वि.	चैत्र कृ. ४, विशा.	श्रावण शु. ७, विशाखा
२४	श्री महावीर	आषाढ़ शु. ६, उ फाल्गुण	चैत्र शु. १३, उ. फा.	मार्गशिर कृ. १० उत्तरा फाल्गुन	वैशाख शु. १० उ. फा.	कार्तिक कृ. १४, स्वाति

(४) तिथि क्रम से नक्षत्रों सहित शुद्ध तिथि कोष्ट

क्र. सं.	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर का कौन कल्याणक
१	कार्तिक शु० २-३	मूल	श्री पुष्पदन्तका ज्ञान कल्याणक
२	„ ६	उत्तराषाढ़	श्री नेमनाथ का गर्भ क.
३	„ १२	रेवती	श्री अर्हनाथ का ज्ञान क.
४	„ १५	मृगशिरा	श्री सम्भवनाथ का जन्म क.
५	मार्गशिर कृ. १०	उ. फा. हस्त	श्रीमहावीर का तप क.
६	„ शु. १	मूल	श्री पुष्पदन्त का जन्म क. तप कल्याणक
७	„ „ १०	रेवती	श्री अर्हनाथ का तप क.
८	„ „ ११	अश्विनी	श्री मल्लिनाथ का जन्म व तप कल्याणक
			श्री नमिनाथ का ज्ञान क.
९	„ „ १४	रोहिणी	श्री अर्हनाथ का जन्म क.
१०	„ „ १५	मृगशिरा	श्री सम्भवनाथ का तप क.
११	पौष कृ. २	पुष्य	श्री मल्लिनाथ का ज्ञान क०
१२	„ „ ११	अनुराधा	श्री चन्द्रप्रभका जन्म व 'तप' क०

क्र. सं.	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर से का कौन कल्याणक
	पौष कृ. ११	विशाखा	श्री पार्श्वनाथ का 'जन्म' व 'तप' क०
१३	„ „ १४	पूर्वाषाढ़	श्री शीतल नाथ का 'ज्ञान' क.
१४	„ शु. १०-११	भरणी	श्री शान्ति नाथ का 'ज्ञान' क.
१५	„ „ ११	रोहिणी	श्री अजित नाथ का 'ज्ञान' क.
१६	„ „ १४-१५	पुनर्वसु	श्री अभिनन्दन का 'ज्ञान' क.
१७	„ „ १५	पुष्य	श्री धर्म नाथ का 'ज्ञान' क.
१८	माघ कृष्ण ६	चित्रा	श्री पद्मप्रभ का 'गर्भ' क.
१९	„ „ १२	पूर्वाषाढ़	श्री शीतल नाथ का 'जन्म' व 'तप' क.
२०	„ „ १४	उत्तराषाढ़	श्री ऋषभदेव का 'मोक्ष' क.
२१	„ „ ३०	श्रवण	श्री श्रेयांश नाथ का 'ज्ञान' क.
२२	„ शु. २	शतभिषा	श्री वासुपूज्य का 'ज्ञान' क.
२३	„ „ ४	उ० भाद्रपद	श्री विमल नाथ का 'जन्म' व 'तप' क.
२४	„ „ ६	„	श्री विमल नाथका 'ज्ञान' क.

क्रम सं०	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर का कौन कल्याणक	क्रम सं०	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर का कौन कल्याणक
२५	माघशु.९-१०	रोहिणी	श्री अजित नाथ का 'तप' क.		फाल्गुन कृ. ११-१२	श्रवण	श्री श्रेयाँशनाथ का 'जन्म' क. और 'तप' क.
२६	" " १०	"	श्री अजित नाथ का 'जन्म' क.	३४	" " १२	"	श्री मुनिसुव्रत नाथ का 'मोक्ष' क.
२७	" " १२	पुनर्वसु	श्री अभिनन्दन का 'जन्म' व 'तप' क.	३५	" " १४	शतभिषा	श्रीवासुपूज्य का 'जन्म' क. और तप' क.
२८	" " १३	पुष्य	श्री धर्म नाथ का 'तप' क.	३६	" शु० ३	रेवती	श्री अरनाथ का 'गर्भ' क.
	" " १३-१४	"	श्री धर्म नाथ का 'जन्म' क.	३७	" " ५	अश्विनी-भरणी	श्री मल्लिनाथ का 'मोक्ष क.
२९	फाल्गुन कृ.४	चित्रा	श्री पद्मप्रभु का 'मोक्ष' क.	३८	" " ८	मृगशिरा	श्री संभवनाथ का 'गर्भ'क.
३०	" " ६-७	विशाखा	श्री सुपार्श्वनाथ का 'ज्ञान' क.	३९	चैत्र कृ. ४	विशाखा	श्री पार्श्वनाथ का 'ज्ञान,क.
३१	" " ७	वि. अनु.	श्री सुपार्श्वनाथ का 'मोक्ष' क.	४०	" " ५	अनुराधा-ज्येष्ठा	श्री चन्द्र प्रभु का 'गर्भ' क.
	" " ७	अनुराधा	श्री चन्द्रप्रभु का 'ज्ञान' क.	४१	" " ८	पूर्वाषाढ़	श्री शीतल नाथ का 'गर्भ' क.
	" " ७	अनु. ज्ये.	श्री चन्द्रप्रभु का 'मोक्ष' क.	४२	" " ९	उत्तराषाढ़	श्री ऋषभदेव का 'जन्म' क. और 'तप' क.
३२	" " ९	मूल	श्री पुष्प दन्त का 'गर्भ' क.	४३	" " ३०	रेवती	श्री अनन्त नाथ का 'ज्ञान' क. और 'मोक्ष' क.
३३	फाल्गुनकृ.११	उत्तराषाढ़-श्रवण	श्री ऋषभदेव का 'ज्ञान' क.				श्री अरनाथ का 'मोक्ष' क.

क्र. सं.	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर का कौन कल्याणक
४४	चैत्र शु. १	अश्विनी	श्री मल्लि नाथ का 'गर्भ' कल्याणक
४५	„ „ ३	कृतिका	श्री कुंथनाथ का 'ज्ञान' क.
४६	„ „ ५	रोहिणी	श्री अजित नाथ का 'मोक्ष' क.
४७	„ „ ६	मृगशिरा	श्री संभव नाथ का 'मोक्ष' क.
४८	चैत्रशु.१०-११	मघा	श्री सुमति नाथ का 'ज्ञान' क. और 'मोक्ष' क.
	„ „ ११	मघा	श्री सुमति नाथकाजन्म'क.
४९	„ „ १३	उत्तराफाल्गुनी	श्री महावीर भगवान का 'जन्म' क.
५०	„ „ १५	चित्रा	श्री पद्मप्रभु का 'ज्ञान' क.
५१	वैसाख कृ. २	विशाखा	श्री पार्श्वनाथ का 'गर्भ'क.
५२	„ „ ९	श्रवण	श्री मुनिसुव्रत नाथ का 'ज्ञान' क.
५३	„ „ ९-१०	„	श्री मुनिसुव्रत नाथ का'तप' क.
	„ „ १०	„	श्री मुनिसुव्रत का 'जन्म'क.

क्र. सं.	तिथि	नक्षत्र	किस तीर्थंकर का कौन कल्याणक
५४	वैसाख कृ.१४	अश्विनी	श्री नमिनाथ का 'मोक्ष' क.
५५	„ शु० १	कृत्तिका	श्री कुन्थुनाथ का 'जन्म' क. 'तप' क. 'मोक्ष' क.
५६	„ „ ६	पुनर्वसु	श्री अभिनन्दन नाथ का 'गर्भ' क.
	„ „ ६-७	„	श्री अभिनन्दन नाथ का 'मोक्ष' क.
५७	„ „ ८	पुष्य	श्री धर्मनाथ का 'गर्भ' क.
५८	„ „ ९	मघा	श्री सुमति नाथ का 'तप' क.
५९	„ „ १०	उत्तराफाल्गुनी-हस्त	श्री महावीर का 'ज्ञान' क.
६०	ज्येष्ठ कृ० ६	श्रवण	श्री श्रेयांसनाथ का 'गर्भ' क.
६१	„ „ १०	उ० भाद्रपद	श्री विमल नाथ का 'गर्भ' क.
६२	„ „ १२	रेवती	श्री अनन्तनाथ का 'जन्म' और तप क.
६३	„ „ १३-१४	भरणी	श्री शान्ति नाथ का 'तप' क.

	ज्येष्ठ कृ. १४	भरणी	श्री शान्तिनाथ का 'जन्म' और 'मोक्ष' क.	७६	श्रावण शु० ६	चित्रा	श्री नेमिनाथ का 'जन्म' और 'तप' क.
६४	,, ,, ३०	रोहिणी	श्री अजित नाथका 'गर्भ' क.	७७	,, ,, ७	विशाखा	श्री पार्श्वनाथ का 'मोक्ष' क.
६५	,, शु० ४	पुष्य	श्री धर्मनाथ का 'मोक्ष' क.	७८	,, ,, १५	श्रवण-धनिष्ठा	श्री श्रेयाँशनाथ का 'मोक्ष' क.
६६	,, ,, १२	विशाखा	श्री सुपार्श्वनाथ का 'जन्म' क.	७९	भाद्रपदकृ०७	भरणी	श्री शान्तिनाथ का 'गर्भ' क.
	,, ,, १२-१३	विशाखा	श्री सुपार्श्वनाथका 'तप' क.	८०	भाद्रपदशु०६	विशाखा	श्री सुपार्श्वनाथ का 'गर्भ' क.
६७	आषाढ़ कृ०२	उत्तराषाढ़	श्री ऋषभदेव का 'गर्भ' क.	८१	,, ,, ८	मूल	श्री पुष्पदन्त का 'मोक्ष' क.
६८	,, ,, ६	शतभिषा	श्री वासुपूज्य का 'गर्भ' क.	८२	,, ,, १४	शतभिषा	श्री वासुपूज्य का 'मोक्ष' क.
६९	,, ,, ८	उ०भाद्रपद	श्री विमल नाथ का 'मोक्ष' क.	८३	आश्विनकृ०२	अश्विनी	श्री नमिनाथ का 'गर्भ' क.
७०	,, ,, १०	अश्विनी	श्री नमिनाथ का 'जन्म' और 'तप' क.	८४	आश्विनशु०१	चित्रा	श्री नेमिनाथ का 'ज्ञान' क.
७१	,, शु० ६	उ०फाल्गुणी	श्री महावीर का 'गर्भ' क.	८५	,, ,, ८	पूर्वाषाढ़	श्री शीतलनाथ का 'मोक्ष' क.
७२	,, ,, ७-८	चित्रा	श्री नेमिनाथ का 'मोक्ष' क.	८६	कार्त्तिककृ०१	रेवती	श्री अनन्तनाथ का 'गर्भ' क.
७३	श्रावण कृ०२	श्रवण	श्रीमुनिसुव्रतनाथका 'गर्भ' क.	८७	,, कृ० ४-५	मृगशिरा	श्री संभवनाथ का 'ज्ञान' क.
७४	श्रावण कृ. १०	कृत्तिका	श्री कुन्थु नाथ का 'गर्भ' क.	८८	कार्तिककृ.१३	चित्रा	श्री पद्मप्रभ का 'जन्म' और 'तप' क.
७५	श्रावण शु०२		श्री सुमतिनाथ का 'गर्भ' क.	८९	,, ,, १४-३०	स्वाति	श्री महावीर का 'मोक्ष' क.

(५)कविवर कृत लोकोक्ति युक्त जिनेन्द्रस्तुति

कवित्तछन्द (३१मात्रा)

हे शिवतियवर जिनवर तुम पद, पङ्कज मँह कमला को वास ।
विघन विनाशक सब सुख दायक, शिवर सुजस जस रह्यो प्रकाश ॥
सो पद सुधासरोवर तजि जो, चाहत हरन ओस जल प्यास ।
तास आश अनयास अफल ज्यों, "डंडा ले कूटै आकाश" ॥१॥
दुखटारन सुखकारन प्रभु सों, प्रीति न कर हिये हित चाह ।
भ्रामिक गात्र विवश निशिवासर, भजै कुदेव कुग्रन्थ कुराह ॥
पाय बँबूल शूलतरु सों शठ, आम चखन की राखत चाह ।
ताकी आश अफल यों जानो, "जैसे बांझ पूत को ब्याह" ॥ २ ॥
जनरंजन अघभंजन प्रभुपद कँजन करत रमा नित केल ।
चिंतामन कल्पद्रुम पारस, बसत जहां सुर चित्रावेल ॥
सो पद त्यागि मूढ़ निशिवासर, सुख हित करत क्रिया अनमेल ।
नीति निपुन यों कहैं ताहि वर, "बालू पेलि निकालै तेल" ॥ ३ ॥
मोह विवश मम मति अति श्रीपति, मलिन भई गति अगति न विद्ध ।
तातैं भूलि बन्यो यह कारज, हे आरज आचारज वृद्ध ॥
तासु उदय दुख दुसह सह्यो अब, आयो शरन पुकारि प्रसिद्ध ॥

राखहु लाज जानि जन अपनो, "गरे परे सु बजाये सिद्ध" ॥ ४ ॥
जानत हौं अब औगुन को फल, प्रगट दुखद यह प्रगट दिखाय।
तौ भी परवश जाय भुकत मन, मानत नाहीं शिव सुखदाय ॥
विना तुम्हारी कृपा कृपानिधि, मिटै न यह हठ आन उपाय।
वक्र चक्र गत तजत न अन्तर, जैसे "बरदमूत को न्याय" ॥ ५ ॥
भक्त मुक्त दातार कल्प तरु, कीरत कुसुमित शशि सम सेत।
इन्द्रहमिंद्र अहिंद्र जजत नित, भव सागर तारन सुख सेत ॥
मो मन बसहु निरंतर स्वामी, हरो विघन दुख दारिद खेत।
प्रभुपद माहिं प्रीति नित बाढ़ौ, ज्यों "श्रीपति अतिशायिनहेत" ॥ ६ ॥
चहुंगति भ्रमत मोह मिथ्यावश, काल अनंत गँवार गमाय।
श्रीपति सों नहि नेह कियो किम, काटै भव बंधन दुखदाय ॥
अब सुघाट शुभवाट मिल्यो है, ठाटबाट उदघाट उपाय।
शिव हित हेत आज सब पायो, यथा "काक ताली को न्याय" ॥ ७ ॥

मत्तगयन्द(३२मात्रा)–जो अपनो हित चाहत है जिय, तौ यह सीख हिये अब धारौ।
कर्मज भाव तजो सब ही निज, आतम को अनुभौ रस गारो ॥
श्री जिनचंद्र सों नेह करो नित, आनद कंद सदा विस्तारो।
मूढ़ लखै नहिं गूढ़ कथा यह, "गोकुल गांव को पैंडा हि न्यारो" ॥८॥

माधवी ३४ मात्रा) नर नारक आदिक जौनि विषै, विषयातुर होय तहां उरभै है।

नहिं पावत है सुख रंच तऊ, परपंच प्रपंचनि में सुरझै है ॥
जिन नायक सों हित प्रीति विना, चित चिन्तित आश कहां सुरझै है ;
जिय देखत क्यों न विचार हिये, "कहुं ओसकी बूंद सों प्यास बुझै है" ॥९॥

जिय पूरब तो न विचार करै, अति आतुर ह्वै बहु पाप उपावै ।
जिन आनंद कंद जिनिन्द्र तनें, पद पंकज सों नहिं नेह लगावै ॥
जब तास उदय दुःख आन परै, तब मूढ़ वृथा जग में विललावै ।
अब पाप अताप बुझावनको शठ, "आगि लगे पर कूप खुदावै" ॥१०॥

कवित्त (३१ मात्रा)—मोह उदय अज्ञान विवश तैं, समुझि परत नहीं नीक अनीक ।
सुख कारन अति आतुर मूरख, बांधत पाप भार भर ठीक ॥
तासु उदयदुःख दुसह होत तब, सुख हित करत उपाय अधीक ।
वृथा होत पुरुषारथ जैसे, "पीटै मूढ़ सांपकी लीक" ॥११॥

माधवी (३४ मात्रा)—जब ही यह चेतन मोह उदै, पर वस्तु विषै सुख कारन धावै ।
तबही दृढ़ कर्म जँजीरनसों, बँधि के भव चारक वासमें आवै ॥
जिन नायकसों बिन प्रीति किये, कहु को भव बंधन काटि छुड़ावै ।
विष खाय सों क्यों नहिं मान तजै, "गुड़ खाय सो क्यों नहिं कान बिंधावै" ॥१२॥

जब आतम आप अमोहित ह्वै, अन आतमता तजि आतम ध्यावै ।
तब संचित जन्म अनेकनिके अघ, ईंधन को दव ध्यान धरावै ॥
जिन चंद्र सुखाम्बुधि वर्द्धन सों, कर प्रीति निरंतर आनँद पावै ।
विष खाय न काहेको मान तजै, "गुड़ खाय न काहे को कान बिंधावै" ॥१३॥

* ॐ *

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

(६) अथ श्रीवर्तमानचतुर्विंशतिजिनपञ्चकल्याणक पाठ

दोहा ।

वन्दौं पांचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास ।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश ॥
चौबीसों जिनपति नमें, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधुनमि, रचौं पाठ सुखदाय ॥

नामावली स्तोत्र ।

(छन्द नयमालिनी, तथा तामरस व चंडी १६ मात्रा)

जय जिनिन्द्र सुखकन्द नमस्ते । जय जिनिन्द्र जित फन्द नमस्ते ।
जय जिनिन्द्र वरबोध नमस्ते । जय जिनिन्द्र जित क्रोध नमस्ते ॥ १ ।
पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्ह वरन जुत बिन्दु नमस्ते ।
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥
पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म घन घर्म नमस्ते ।
दृग विशाल वरभाल नमस्ते । हृद दयाल गुन पाल नमस्ते ॥ ३ ॥

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते। चिद्विलास भूत ध्यान नमस्ते।
वीतराग विज्ञान नमस्ते। ऋद्धि सिद्धि वर वृद्धि नमस्ते॥ ४॥
स्वच्छ गुणाम्बुधि रत्ननमस्ते। सत्व हितंकर यत्न नमस्ते।
कुनय करी मृगराज नमस्ते। मिथ्या खग वर बाज नमस्ते॥ ५॥
भव्य भवोदधि तार नमस्ते। शर्मामृत सित सार नमस्ते।
दरश ज्ञान सुखवीर्य नमस्ते। चतुरानन धर धीर्य नमस्ते॥ ६॥
हरि हर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते। मोह मर्दमनु जिष्णु नमस्ते।
महा दान महा भोग नमस्ते। महाज्ञान मह जोग नमस्ते॥ ७॥
महा उग्र तप सूर नमस्ते। महा मौन गुण भूरि नमस्ते।
धरम चक्र वृष केतु नमस्ते। भव समुद्र शत सेतु नमस्ते॥ ८॥
विधा ईश मुनीश नमस्ते। इन्द्रादिक नुत शीश नमस्ते।
जय रतनत्रय राय नमस्ते। सकल जीव सुखदाय नमस्ते॥ ९॥
अशरन शरनसहाय नमस्ते। भव्य सुपन्थ लगाय नमस्ते।
निराकार साकार नमस्ते। एकानेक अधार नमस्ते॥ १०॥
लोकालोक विलोक नमस्ते। त्रिधा सर्व गुन थोक नमस्ते।
सल्ल दल्ल दलमल्ल नमस्ते। कल्ल मल्ल जितछल्ल नमस्ते॥ ११॥
भुक्ति मुक्ति दातार नमस्ते। उक्ति सुक्ति शृङ्गार नमस्ते।
गुन अनन्त भगवन्त नमस्ते। जै जै जै जयवन्त नमस्ते॥ १२॥

(इति पठित्वा जिन चरणाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ चतुर्विंशति जिन स्थापना ।

श्रीवृषभादि अन्त महवीरं । चौबीसों जिन अति सुखसीरं ॥
थापत हूं पद पूजन हेता । दुःख विनाशक सब सुख देता ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिन समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिन समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणं ।

अथ चतुर्विंशतिजिन गर्भ कल्याणक पूजा ।

१: ऋषभदेव—असित दोयज साढ़ सुहावनं । गरभ मङ्गल को दिन पावनं ॥
हरि शची पितु मातहिं सेवहीं । जजत हैं हम श्रीजिन देवहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, संसार ताप विनाशनाय चन्दनं
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, काम बाण विध्वंसनाय पुष्प ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, क्षुधारोग विनाशयाय नैवेद्यं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, अष्ट कर्म दहनाय धूपं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, मोक्ष फल प्राप्तये फलं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय आषाढ़ कृ० २, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं ।

श्री आदीश्वर चरणयुग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्दपद प्राप्तये पूर्णार्घं, निर्वपामि इति स्वाहा ॥

२. श्रीअजितनाथ—जेठ असेत, अमावस सोहै । गर्भदिनानँद सों मन मोहै ॥

इन्द्र फनेन्द्र जजें मन लाई । हम पद पूजत मन हर्षाई ॥

ॐ ह्रीं श्री अजित जिनाय ज्येष्ठ कृ० अमावस्या, रोहिणी नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनायजलं ।

ॐ ह्रीं श्री अजित जिनाय ज्येष्ठ कृ० अमावस्या, रोहिणी नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, संसार ताप विनाशनाय चन्दनं ।

(इत्यादि उपर्युक्त ॐ ह्रीं आदि बोल बोल कर आठों द्रव्य अर्घ सहित चढ़ावै) ॥

श्री अजितेश्वर चरणयुग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्दयुत पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्दपद प्राप्तयेपूर्णार्घं, निर्वपामि इति स्वाहा ॥

३. श्री संभवनाथ—माता गर्भ विषै जिन आय । फागुन सित आठैं सुखदाय ॥

सेवैं सुरतिय छप्पन वृन्द । नाना विधि मैं जजूं जिनिन्द ॥

ॐ ह्रीं श्री संभव नाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शु. ८, मृगशिराभे. गर्भकल्याणकाय, जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं । संसारताप विनाशनाय चन्दनं । अक्षयपद प्राप्तयेअक्षतं । इत्यादि

श्री संभवके चरणयुग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत पूजूं जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं, निर्वपामीति स्वाहा ॥

४. श्रीअभिनन्दननाथ—शुकल छट्ठ वैशाख विषै तजि, आये श्री जिनदेव ।

सिद्धारथ माता के उरमें, करै शची शुचि सेव ॥

रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेक प्रकार ।

ऐसे गुन निधि कों मैं पूजूं, ध्याऊं बारम्बार ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ल ६, पुनर्वसुनक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनं इत्यादि ॥

श्री अभिनन्दन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

५. श्री सुमतिनाथ–संजयंत तजि गरभ पधारे । श्रावण सेत दुतिय सुख कारे ॥

रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया । जजों चरन जय जय जिनराया ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमति नाथ जिनेन्द्राय श्रावण शु० २, मघा नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चंदनम् । इत्यादि ।

सुमतिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

६. श्री पद्मप्रभू–असित माघ सुछट्ट बखानिये । गरभ मंगल तादिन मानिये ॥

ऊर्द्ध ग्रीवक सों चय राज जी । जजत इंद्र जजें हम आज जी ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय माघ कृष्ण ६, चित्रा नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चंदनं । इत्यादि ।

पद्मप्रभू के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

७. श्री सुपार्श्वनाथ–सुकल भादव छट्ट सुजानिये । गरभ मङ्गल तादिन मानिये ॥

करत सेव शची रचि मातकी । दरव लेय नमों वसु भांतिकी ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ल ६. विशाखा नक्षत्रे,गर्भ कल्याणकाय,जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं। संसार ताप विनाशनाय चंदनम् । इत्यादि ।

श्री सुपार्श्व के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गरभ दिवस आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

८. श्री चन्द्रप्रभु-कलि पञ्चम चैत सुहात अली । गर्भागम मंगल मोद भली ॥

हरि हर्षित पूजत मात पिता । हम ध्यावत पावत शर्म सिता ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय चैत कृष्ण ५ अनुराधा नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

चन्द्रप्रभु के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिन पदसार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

९. श्री पुष्पदन्त—

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभ मांहि थिति देवा जी। तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत शचीतित सेवा जी ॥ रतनन की धारा परम उदारा, पड़ी व्योम तैं सारा जी। मैं पूजों ध्यावों भगति बढ़ावों, करो मोहि भव पारा जी ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ९, मूल नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् ॥ इत्यादि ॥

पुष्पदंत के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१०. श्री शीतलनाथ—आठैं वदी चैत सुगर्भ माहीं । आये प्रभू मंगल रूप थाहीं ॥
सेवे शची मातु अनेक भेवा । चर्चों सदा शीतलनाथ देवा ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण ८, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनायजलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री शीतल जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनचरणाग्रे पूर्णानन्दपद प्राप्तये पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

११. श्री श्रेयांशनाथ—पुष्पोत्तर तजि आये, विमला उर जेठ कृष्ण षष्ठी को
सुर नर मङ्गल गाये, मैं पूजों आठ कर्म नष्टी को ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृ० ६, श्रवण नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्रेयाँश जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयाँशनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१२. श्री वासुपूज्य—कलि छट्ट असाढ़ सुहाये । गरभागम मंगल पाये ।
दशवें दिवितें इत आये । शत इन्द्र जजें शिर नाये ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय आषाढ़ कृ० ६, शतभिषा नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं, कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं, इत्यादि ।

वासुपूज्य जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

१३. श्री विमलनाथ–गरभ जेठ बदी दशमी भनौं, परम पावन सो दिन शोभनौं ।
करत सेव शची जननी तणी, हम जजैं पद पद्म शिरोमणी ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृ० १०, उत्तरा-भाद्रपद नक्षत्रे गर्भकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं, कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं । इत्यादि ॥

विमलनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनचरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

१४. श्रीअनन्त नाथ–असित कातिक एकम भावनो । गरभ को दिन सो गिन पावनो ॥
किय शची तित चर्चन चावसों । हम जजैं इत आनन्द भाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण १, रेवती नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं, कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं । इत्यादि ॥

श्री अनन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१५. श्रीधर्मनाथ–आठें सित बैसाख की हो । गरभ दिवस अधिकार ॥
जग जन वांछित पूजों । हो अपार, परम जिनेश्वर पूजों । पूजों हो अपार ।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय बैशाख शु० ८, पुष्य नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्, अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं, काम वेदना विनाशनाय पुष्पं । इत्यादि ॥

धरमनाथ जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१६. श्री शांतिनाथ–असित सातय भादव जानिये । गरभ मंगल तादिन मानिये ।
शचि कियो जननीपद चर्चनं । हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद कृ० ७, भरणी नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं । संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं, कामवेदना विनाशनाय पुष्पं । इत्यादि ॥

शांतिनाथ जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१७. श्री कुंथनाथ–सु सावन की दशमी कलि जान, तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ।
भयो गरभागम मंगल सार, जजैं हम श्रीपद अष्ट प्रकार ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृ० १०, कृत्तिका नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं इत्यादि ॥

कुन्थनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१८. श्री अरहनाथ–फागुन सुदी तीन सुखदाई, गरभ सुमङ्गल तादिन पाई ।
मित्रादेवी उदर सु आये, जजैं इंद्र हम पूजन आये ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन शु० ३. रेवती नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् ॥ इत्यादि ॥

अरहनाथ जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गरभ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१९. श्रीमल्लिनाथ–चैत की शुद्ध एकै भली राजई, गरभ कल्यान कल्यान को साजई।

कुम्भराजा प्रजापति मातातने, देव देवी जजें शीश नाये घने ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शु० १, अश्विनी नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

मल्लिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२०. श्रीमुनिसुव्रतनाथ–तिथि दोयज सावन श्याम भयो, गरभागम मङ्गल मोद थयो।

हरि वृन्द शची पितु मात जजें, हम पूजत ज्यों अघ ओघ भजें ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृ० २,श्रवण नक्षत्रे,गर्भ कल्याणकाय,जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय········संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

मुनिसुव्रत जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गर्भ दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२१. श्री नमिनाथ–गरभागम मंगल चारा, जुग आश्विन श्याम उदारा।

हरि हर्षि जजे पितु माता, हम पूजें त्रिभुवन-ताता ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन कृ० २, अश्विनी नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

श्री नमिजिन के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२२. श्री नेमनाथ–सित कातिक छट्ठ अनन्दा। गरभागम आनंद कन्दा।
शंचि सेय शिवापद आई। हम पूजत मन वच काई॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शु० ६. उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

नेमनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२३. श्रीपार्श्वनाथ–पक्ष वैशाख की श्याम दूजी भनों। गर्भ कल्यान को द्यौस सो ही मनों॥
देव देवेन्द्र श्रीमातु सेवैं सदा। मैं जजों नित्य ज्यों विघ्न होवैं विदा॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृ० २. विशाखा नक्षत्रे, गर्भकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

पार्श्वनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। गर्भ दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२४. श्री वर्द्धमान—गरभ साढ़सित छट्ठ लियो थिति। त्रिशला उर अघ हरना॥
सुर सुरपति तित सेव कर्यो नित। मैं पूजों भव तरना। मोहि राखो हो शरना,

श्रीवर्द्धमान जिन रायजी, मोहि राखो हो, शरना ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय आषाढ़ शु० ६, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे, गर्भ कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

महावीर जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । गर्भ दिवस आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिन चरणाग्रे, पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला

(३२ मात्रिक छन्द घत्तानन्द)

जय जय जिन चन्दा सर्व जिनिन्दा, हनि भव फन्दा फन्दा जू ।
वासव शत वन्दा धरि आनन्दा, ज्ञान अमन्दा नन्दा जू ॥ १ ॥

(२० मात्रिक छन्द कामिनी-मोहन)

जयति जिनराज शिवराज हितहेतु हो । परम वैराग आनन्द भरि देत हो ।
गर्भ के पूर्व षट मास धन देव ने । नगर निरमापि बहु भक्ति युत सेवने ॥ २ ॥
गगन सों रतन की धार बहु वर्षहीं । कोड़ त्रैअर्द्ध त्रैवार सब हर्षहीं ।
तात के सदन गुनवदन रचना रची । मातु की सर्व विधि करत सेवा शची ॥ ३ ॥
भयो जब गर्भ तब इन्द्र आसन चल्यो । होय चकित तुरित अवधि ते लख भल्यो ।
सप्त पग जाय शिर नाय वन्दन करी । चलन उमग्यो तबै मान धनि धनि धरी ॥ ४ ॥
सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाजले । गन्धरब निरत कारी सबै साज ले ।

इन्हैं आदिक सकल साज सँग लायके। तीन फेरी करीं गरभपुर आय के ॥ ५ ॥
मात पितु बन्द कर भ्रूण शिर नायके। गमन निज गेह कियो चित्तहर्षाय के ॥
हे त्रिजग नाथ मम विनय उरधारिये। "धर्म के नन्द" को भव उदध तारिये ॥ ६ ॥

(३२मात्रिक छन्द घतानन्द)

जय करुणाधारी शिव हित कारी। तारण तरण जिहाजा हो।
सेवक नित वन्दै मन आनन्दै। भव भय मेटन काजा हो ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनगर्भमंगल मंडिताय परमोत्कृष्टपद प्राप्तये परमार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

(२४ मात्रिक छन्द दोहा)

चौबीसों जिन चरण जो। जजैं पढ़ैं यह पाठ।
अनुमोदे सो चतुर नर। पावैं आनन्द ठाठ ॥ ८ ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अथ चतुर्विंशति जिन जन्म कल्याणक पूजा।

१. श्रीऋषभनाथ—असित चैत सुनौमि सुहाइयो, जनम मङ्गल तादिन पाइयो।
हरि महागिरि पै जजियो तबै, हम जजैं पद पङ्कज को अबै ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय चैत कृ० ९, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय ……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री आदीश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेव जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२. श्री अजितनाथ—माघसुदी दशमी दिन जाये। त्रिभुवन में अति हर्ष बढ़ाये ॥
इंद्र फनिंद्र जजे तित आई। हम इत सेवत हैं हुलसाई ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० १०, रोहिणी नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु, विनाशनाय जलम्
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय…… संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री अजितेश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन पदाग्रे श्री पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

३. श्री संभवनाथ—कार्तिक सित पूनम तिथि जान। तीन ज्ञान युत जन्म प्रमान ॥
धरि गिरराज जजे सुरराज। तिन्हें जजों मैं निज हितकाज ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शु० १५, मृगशिरा नक्षत्रे, जन्मकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु, विनाशनायजलं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय….. संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री संभव के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिन पदाग्रे श्री पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

४. श्री अभिनंदननाथ-माघ शुक्ल तिथि द्वादशि के दिन, तीन लोक हितकार।

अभिनंदन आनंद कंद तुम, लीन्हों जग अवतार ॥
एक महूरत नरक माँहि हू, पायो सब जिय चैन ।
कनकवरन कपि चिह्न धरनपद, जजों तुम्हें दिन रैन ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय माघशु० १२, पुनर्वसु नक्षत्रे, जन्मकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री अभिनन्दन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

५. श्री सुमतिनाथ—चैत्र सुकुल ग्यारस तिथि जानों । जन्मे सुमति सहित त्रय ज्ञानों ।
मानों धर्यो धरम अवतारा । जजों चरन जुग अष्ट प्रकारा ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल ११, मघा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

सुमतिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

६. श्रीपद्मप्रभू-असित कार्तिक तेरस को जये । त्रिजग जीव सुआनंद को लये ॥
नगर स्वर्ग समान कुसंबिका । जजतुहैं हरि संजुत अम्बिका ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय कार्तिक वदी १३, चित्रा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

पद्मप्रभू के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

७. श्री सुपार्श्वनाथ—सुकल जेठ, दुवादशि जनमये, सकल जीव सु आनँद तन्मये ।

त्रिदशराज जजैं गिरि राजजी, हम जजैं पद मंगल साज जी ।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ शु० १२, विशाखा नक्षत्रे, जन्म कल्याण काय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्व नाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री सुपार्श्व के चरण युग, अष्ट द्रव्य भरथार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिन पद सार ।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

८. श्रीचन्द्रप्रभू—कलि पौष इकादशि जन्म लियो, तब लोक विषै सुख-थोक भयो ।

सुर ईश जजैं गिर शीश तबै, हम पूजत हैं नुत शीश अबै ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय पौष वदी ११, अनुराधा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

चन्द्रप्रभू के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ।।

ॐ ह्रीं श्री. चन्द्रप्रभू जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

९. श्रीपुष्पदन्त—मँगसिर सित पच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथ नाथा जी ।

तबही चव भेवा निरजर येवा, आयनये निज माथा जी ।।

सुरगिर नहवाये, मंगल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी ।

मैं पूजौं ध्यावों भगत बढ़ावौं, निज निधि हेत सहाई जी ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मँगसिर शु० १, मूल नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय ......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् ॥ इत्यादि ॥

पुष्पदन्त के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१०. श्रीशीतलनाथ–श्रीमाघ की द्वादशि श्याम जानों, वैराग्य पायो भव भाव हानों ।

ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा, चर्चों सदा चर्न निवार कोहा ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय माघ कृ० १२, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

ॐ श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री शीतल जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

११. श्री श्रेयांशनाथ–जन्मे फागुनकारी, एकादशि तीन ज्ञान दृगधारी ।

इक्ष्वाक वंशतारी, मैं पूजों घोर विघ्न दुःख टारी ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ११, श्रवण नक्षत्रे, जन्मकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय......संसार तापविनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्रेयांशनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१२. श्रीवासुपूज्य–कलि चौदश फागुन जानों, जन्में जगदीश महानों ।
हरि मेरु जजें तब जाई, हम पूजत हैं चितलाई ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुण कृ० १४, शतभिषा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

वासुपूज्य जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनचरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१३. श्रीविमलनाथ–शुकल माघ तुरी तिथि जानिये, जनम मङ्गल तादिन मानिये ।
हरि तबै गिरिराज विषै जजैं, हम समर्चत आनन्द को सजैं ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० ४, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

विमलनाथ जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१४. श्रीअनन्तनाथ–जनम जेठ वदी तिथि द्वादशी, सकल मङ्गल लोक विषै लशी ।
हरिजजे गिरिराज समाज तैं, हम जजैं इत आतम काज तैं ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृ० १२, रेवती नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री अनन्त के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१५, श्रीधर्मनाथ—शुकल माघ तेरस लयो हो, धरम धरम अवतार।
सुरपति सुरगिर पूजों,पूजों हो अवार, धरम जिनेश्वर पूजों, पूजों हो अवार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० १३, पुनर्वसु नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

धर्मनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१६. श्रीशांतिनाथ–जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है, सकल इंद्र सुआगत धाम है।
गजपुरे गज साजि सबै तबै, गिर जजे इत मैं जजिहों अबै ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृ० १४, भरणी नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

शांतिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१७, श्रीकुंथनाथ–प्रहा वैशाख सु एकम शुद्ध, भयो तब जन्मति ज्ञान समुद्ध।
कियो हरि मङ्गल मोदगिरीश, जजैं हम अत्र तुम्हैं नुत शीश ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शु० १, कृत्तिका नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रींश्रीकुन्थनाथ जि न्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

कुंथनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्दपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१८. श्री अरहनाथ—मँगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै, गजपुर जन्म भयो अन मोहै।

सुरगुरु जजे मेरु पर जाई, हम इत पूजें मन वच काई ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मँगसिर शु० १४, रोहिणी नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

अरहनाथके चरण युग, अष्ट द्रव्यं भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिन चरणाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घंनिर्वपामीति स्वाहा ॥

१९. श्री मल्लिनाथ—मार्गशीर्ष सुदी ग्यारसी राजई, जन्म कल्यान को द्यौस सो छाजई।

इन्द्र नागेन्द्र पूजें गिरेन्द्रे जिन्हैं, मैं जजों ध्याय के शीस नावों तिन्हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशीर्ष शु० ११, अश्विनी नक्षत्रे, जन्मकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

मल्लिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ—वयसाख वदी दशमी वरनी, जन्में तिहिं द्यौस त्रिलोकधनी।

सुर मन्दर ध्याय पुरन्दरने, मुनिसुव्रतनाथ हमें शरने ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाख वदी १०, श्रवण नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

मुनिसुव्रत के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२१. श्री नमिनाथ—जन्मोत्सव श्याम असाढ़ा, दशमी दिन आनंद बाढ़ा ।

हरि मन्दर पूजे जाई, हम पूजैं मन वच काई ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ कृ० १०, अश्विनी नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री नमि जिनके चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२२. श्री नेमनाथ–सित सावन छट्ट अमंदा, जन्मे त्रिभुवन के चंदा ।

पितु समुद महा सुख पायो, हम पूजत विघन नशायो ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शु० ६, चित्रा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

नेमनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२३. श्री पार्श्वनाथ–पौष की श्याम एकादशी को स्वजी, जन्म लीनों जगन्नाथ धर्मध्वजी ।

जायके नाग नागेन्द्र ने पूजिया, मैं जजों ध्याय के भक्ति धारों हिया ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण ११, विशाखा नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

पार्श्वनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

२४. श्री महावीर-जन्म चैत सित तेरस के दिन, कुंडल पुर कनवरना।

सुर गिर सुर गुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना।

मोहि राखो हो शरणा। श्री वर्द्धमान जिन राजजी, मोहि राखो हो शरणा॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र शु०१३ उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्रे, जन्म कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

महावीर के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। जन्म दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

(२४ मात्रिक छन्द दोहा)

ऋषभादिक चौबीस जिन, जन्म लियो जब आय।

ता क्षण तीनों लोक में, आनंद सब जिय पाय॥१॥

(१६ मात्रिक छन्द पद्धरि।)

जय त्रिजग नाथ चिद्रूप राज। भव सागर में अद्भुत जहाज॥

सुरलोक आयु जब पूर्ण कीन। च्यय कर नर लोकहिं जन्म लीन॥२॥

जब जन्म लियो आनन्द धार। हरि तत्क्षण आयो राज द्वार ॥
इंद्रानी जाय प्रसूत थान। तुम को कर में लै हर्ष मान ॥ ३ ॥
हरि गोद देय सो मोद धार। सिर चमर अमर ढारत अपार ॥
गिरिराज जाय तित शिला पांड। ता पै थाप्यो अभिषेक मांड ॥ ४ ॥
तित पञ्चम उदधि वर्नो सुवार। सुर कर कर करि ल्याये उदार ॥
तब इंद्र सहस कर करि अनंद। तुम सिर धाराढार्‍यो सुनन्द ॥ ५ ॥
अघ घघ घघ वघ धुनि होत घोर। भंभ भभ भभं धध धध कलश शोर ॥
द्रम द्रम द्रम द्रम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नू पुरंग ॥ ६ ॥
तँन नन नन नन नन तनन तान। घंन नन नन घण्टा करत ध्वान ॥
ता थइ थेई थइ थइ थइ सुचाल। जुत नाचत नावत तुमहिं भाल ॥ ७ ॥
चट चट चट अट पट नटत नाट। झट झट झट हट नट शट्ट विराट।
इमि नाचत राचत भगत रङ्ग। सुर लेत जहाँ आनन्द सङ्ग ॥ ८ ॥
इत्यादि अतुल मङ्गल सु ठाठ। तित बन्यो जहाँ सुर गिर विराट ॥
पुनि कर नियोग पितु सदन आय। हरि सौंप निरत तांडव रचाय ॥ ९ ॥
पुनि स्वर्ग गयो तुम इत जिनाय। वय पाय अतुल महिमा लहाय ॥
मैं ध्यावत हूं नित शीश नाथ। मेरी भव बाधा हर जिनाय ॥ १० ॥
सेवक अपनो निज जान जान। करुणा कर भव भय भान भान ॥
यह विघ्न मूल तरु खण्ड खण्ड। चित चिन्तति आनँद मंड मंड ॥ ११ ॥

(३२ मात्रिक छन्द घत्तानन्द)

जिनराज महंता, शिवतिय कंता, सुगुण अनंता, भगवंता।
भव भ्रमण हनंता, सौख्य अनंता, दातारंता रनवंता ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यंन्त चतुर्विंशति जिन जन्म मंगल मंडिताय परमोत्कृष्ट पद प्राप्ताय परमार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(३१ मात्रिक छन्द रूपक सवैया)

चार बीस जिनके पद पङ्कज, जो भवि पूजै मन वच काय।
जन्म जन्म के पातक ताके, तत्छिन तजिकै जाँय पलाय ॥१३॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अथ चतुर्विंशतिजिन तपकल्याणक पूजा।

१. श्री ऋषभदेव—असित नौमि सुचैत धरे सही, तप विशुद्ध सबै समता गही।
निज सुधारस सौं भर लाइयो, हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० ६, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री आदीश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२. श्री अजितनाथ–माघ सुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य विचारा।
इंद्र फनिन्द्र जजे तित आई, हम इत सेवत हैं शिरनाई ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० १०, रोहिणी नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री अजितेश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

३. श्री संभवनाथ–मंगसिर सित पून्यों तप धार, सकल संग तजि जिन अनगार।
ध्यानादिक बल जीते कर्म, चर्चों चरण देहु शिव शर्म ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मँगसिर शु० १५, मृगशिरा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु, विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री संभव के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री संभव जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

४. श्री अभिनन्दननाथ–साढ़े छत्तिस लाख सुपूरब, राज भोग वर भोग।
कछु कारण लखि माघ शुकल, द्वादशि को धार्यो जोग ॥
षष्टम नियम समापत करलिय, इन्द्रदत्त घर छीर।
जय धुनि पुष्प रतन गन्धोदक, वृष्टि सुगंध समीर ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल १२, पुनर्वसु नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि।

श्री अभिनंदन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

५. श्री सुमति नाथ—सित नवमी तिथि शुभ वैशाखा, ता दिन तप धरि निजरस चाखा।

पारन पद्म सद्म पय कीनों, जजत चरण हम समता भीनों॥

ॐ ह्रीं श्री सुमति नाथ जिनेन्द्राय वैशाख शु० ९, मघा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

सुमतिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार।

ॐ ह्रीं श्री सुमति जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

६. श्री पद्मप्रभु—असित तेरस कार्तिक भावनी, तप धर्यो बन षष्ठम पावनी।

करत आतम ध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबै हरो॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कार्त्तिक कृ० १३ चित्रा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

पद्मप्रभू के चरण युग, अष्ठ द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युग, पूजूं जिन पद सार॥

ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्रातये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

७. श्रीसुपार्श्वनाथ—जनम की तिथि श्रीधर ने धरी, तप समस्त प्रमादन को हरी।

नृप महेन्द्र दियो पय भाव सों, हम जजैं इत श्रीपद चावसों ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ शु० १२, विशाखा नक्षत्रे, तप कल्याण काय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री सुपार्श्व जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्व जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

८. श्रीचन्द्रप्रभू–तप दुद्धर श्रीधर आप धरा, कलि पौष इकादशि पर्व वरा ।
निजध्यान विषै लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय पौष कृ० ११, अनुराधा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

चन्द्र प्रभू जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार ।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

९. श्रीपुष्पदन्त–सित मँगसिर मासा तिथि सुख रासा, एकम के दिन धारा जी ।
तप आतम ज्ञानी आकुलहानी मौन सहित अविकारा जी ॥
सुरमित्र सुदानी के घर आनी, गोपय पारन कीना जी ।
तिनको मैं वन्दौं पाप निकन्दौं, जो समता रस भीना जी ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मंगसिर शु० १, मूल नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

पुष्पदन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । तप मंगल दिन हर्ष युतजूं, पू जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१०. श्रीशीतलनाथ–श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जानो, वैराग्य पायो भव भाव हानो ।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा, चर्चों सदा चरण निवार कोहा ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतल नाथ जिनेन्द्राय माघ कृ० १२, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनायजलम्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्री शीतल जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतल जिन पदाग्रे पूर्णान्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

११. श्रीश्रेयांशनाथ–भव तन भोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तप धारा ।
फागुन वदी इग्यारा, मैं पूजौं पाद अष्ट परिकारा ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ११, श्रवण नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

श्रेयाँश जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिन पद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१२. श्रीवासुपूज्य–तिथि चौदशि फागुन श्यामा, धरियो तप श्री अभिरामा ।
नृप सुन्दर घर पय पायो, हम पूजत अति सुख थायो ॥

ॐ ह्रीं श्री वासु पूज्य जिनेन्द्राय फागुन कृ० १४, शतभिषा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि ॥

वासुपूज्य जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भरथार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१३. श्रीविमलनाथ—तप धर्यो सित माघतुरी भली, निज सुधातम ध्यावत हैं रली।
हरि फनेश नरेश जजैं तहां, हम जजैं नित आनँद सौं यहां ॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शु०४, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे, तपकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

विमलनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थर। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१४. श्रीअनन्तनाथ—भव शरीर विनश्वर भाइयो, असित जेठ दुवादशि गाइयो।
सकल इन्द्र जजे तित आयके, हम जजैं इत मङ्गल गाइके ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ वदी १२, रेवती नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय......संसार तापं विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

श्री अनन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१५. श्रीधर्मनाथ—माघ सुकलतेरस लयो है दुद्धर तप अविकार।
सुर ऋषि सुमनन पूज्यो, पूजौं हों अनार, धरम जिनेश्वर पूजौं ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० १३, पुष्य नक्षत्रे, तप कल्याणकाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

धर्म नाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१६. श्रीशांतिनाथ—भव शरीर सुभोग असार हैं, इमि विचार तबै तप धार हैं।

अमर चौदशि जेठ सुहावनी, धरम हेत जजौं गुन पावनी ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ कृ० १४, भरणी नक्षत्र, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री शान्ति नाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

शान्तिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१७. श्री कुन्थनाथ—राज्यो पटखंड विभव जिनचन्द्र, विमोहित चित्त चितार सुछंद।

धरे तप एकम शुद्ध विशाख, सुमग्न भये निज आनँद चाख ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय बैशाख शु० १, कृत्तिका नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु, विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चंदनम्। इत्यादि ॥

कुंथनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१८. श्रीअरहनाथ—मँगसिर सित दशमी दिन राजे, तादिन संयम धरे विराजे।

अपराजित घर भोजन पाईं, हम पूंजत इत चित हर्षाईं ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर शु० १०, रेवती नक्षत्रे, तप कल्याणकाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

अरहनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

१९. श्रीमल्लिनाथ—मार्गशीर्षसुदीग्यारसीके दिना, राजको त्याग दीक्षा धरी है जिना।

दान गोक्षीरको नन्दिषेण दयो, मैं जजों जासुके पञ्चचर्जं भयो॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मंगसिर शु० ११, अश्विनी नक्षत्रे, तप कल्याण काय. जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

मल्लिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ—तप दुद्धर श्रीधर ने गहियो, बैशाख बदी दशमी कहियो।

निरुपाधि समाधि सुध्यावत हैं, हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय बैशाख कृ० १०, श्रवण नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

मुनिसुव्रत जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२१ श्री नमिनाथ—तप दुद्धर श्रीधर धारा, दशमी कलि षाढ़ उदारा।

निज आतमरस झर लायो, हम पूजत आनँद पायो॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ कृ० १०, अश्विनी नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि॥

श्री नमि जिन के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२२. श्री नेमनाथ—तजि राजमती व्रत लीनों, सित सावन छट्ट प्रवीनों।

शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजैं पद शिर नाई ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शु० ६, चित्रा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

नेमनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२३. श्री पार्श्वनाथ—कृष्ण एकादशी पौष की पावनी, राज को त्याग वैराग्य धारयोवनी।

ध्यान चिद्रूप को ध्याय साता मई, आपको मैं जजों भक्ति भावें लई ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृ० ११, विशाखा नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

पार्श्वनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मंगल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२४. श्री महावीर—मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरणा।

नृप कुमार घर पारन कीनों मैं पूजों तुम चरणा। मोहि राखो हो शरणा

श्री वर्द्धमान जिनराज जी, मोहि राखो हो शरणा ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय मंगसिर कृ० १०,उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे, तप कल्याणकाय, जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि ॥

महावीर जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तपकल्याणक-जयमाल।

(२४ मात्रिकछन्द दोहा)

श्री जिनवर के गुण अगम, कहि न सकत सुर राज।
तदपि भक्ति वश कहत हौं, कछुक स्वपर हित काज ॥ १ ॥

(१६ मात्रिक छन्द मोतिया दाम)

जिनेश महेश गुणेश गरिष्ट। सुरासुर सेवित इष्ट वरिष्ट ॥
दया तरु तरपन मेघ महान। कुनय-गिरि भंजन वज्र समान ॥२॥
निमित कछुपायविरस भवभोग। विचार चितैं भव बाधा रोग ॥
भये भवतें भय भीत अनूप। सुभावन भावत आतम रूप ॥३॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त। चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥
अशर्ण नहीं कोउ शर्ण सहाय। जहां जिय भोगत कर्म विपाय ॥४॥
निजातम के परमातम शर्ण। नहीं इनके बिन आपद हर्ण ॥
जगत वैभव जल बुद्‌बुद एव। सदा जिय एक लहै फल भेव ॥५॥
अनेक प्रकार धरी यह देह। भ्रमें भववन धर देह सनेह ॥

अपावन सात कुधात भरीय । चिदातम सों नहिं नेह धरीय ।।६।।
धरै तन सों जब नेह तवेव । सुआवत कर्म तबै वसुभेव ।।
जबै तन भोग विलास उदास । धरै तब संवर निर्जर आस ।।७।।
करै जब कर्म कलङ्क विनाश । लहै तब मोक्ष महा सुख राश ।।
तथा यह लोक नराकृत नित्त । विलोकियते षट द्रव्य विचित्त ।।८।।
सुआतम जानन बोध विहीन । धरै किन तत्व प्रतीत प्रवीन ।।
जिनागम ज्ञानरु संजम भाव । सबै निज ज्ञान विना विरसाव ।।९।।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल । सुभाव सबै जिह तैं शिव हाल ।।
लयो सब जोग सुपुण्य वशाय । कहो किमि दीजिय ताहि गँवाय ।।१०।।
विचारत यों लोकांतिक आय । नमें पद पङ्कज पुष्प चढ़ाय ।।
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार । प्रबोध सुयेम कियो जो विहार ।।११।।
तबै सौधर्म तनों हरि आय । रच्यो शिविका चढ़ि आप जिनाय ।।
तज्यो घन वैभव और समाज । धरे व्रत संयम आतम काज ।।१२।।
जजों तुम पाय जपों गुणसार । प्रभू हम को भवसागर तार ।।
गही शरणागत दीनदयाल । विलम्ब करो मति हे गुणमाल ।।१३।।

(३२ मात्रिक छन्द घत्तानन्द)

जय जय भव भंजन जन मन रंजन, दया धुरन्धर कुमति हरा ।
"वृन्दावन" वंदित मन आनंदित, दीजै आतम ज्ञान वरा ।।१४।।

ओं ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिन तपमङ्गल मंडिताय परमोत्कृष्ट पद प्राप्ताय परमार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(२१ मात्रिक छन्द अरिल्ल)

जो बांचै यह पाठ सरस जिनवर तनों । सो पावे धन धान्य सरस वैभव घनों ॥
सकल पाप क्षय जांय सुयश जगमें बढ़ै । पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढ़ै ॥१५॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

अथ चतुर्विंशतिजिन ज्ञानकल्याणक पूजा ।

१. श्रीऋषभनाथ—असित फागुन ग्यारसि सोहनों, परम केवल ज्ञान जग्यो भनों ।
हरि समूह जजैं तहँ आयके, हम जजैं इत मंगल गायके ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ११, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, ज्ञानकल्याणकाय, जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय......संसार तापविनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि बोलकर प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त चढ़ावें ।

श्री आदीश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । ज्ञान दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभ देव जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२. श्री अजित नाथ—पौष सुदी ग्यारस मन भाय, त्रिभुवन भानु सुकेवल जाय ।
इन्द्र फनिन्द्र जजे तित आय, हम पद पूजत प्रीत लगाय ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पौष शु० ११, रोहिणी नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय ......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

अजितेश्वर के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

३. श्री संभवनाथ—कातिक कलि तिथि चौथ महान, घाति घात लिय केवल ज्ञान।

समवशरण मँह तिष्ठे देव, तुरिय चिह्न चर्चौं वसु भेव ॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक कृ० ४, मृगशिरा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घपर्यन्त ॥

श्री संभव जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री संभव जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

४. श्री अभिनन्दननाथ—पौष शुकल चौदशि को घाते, घातिकरम दुखदाय।

उपजायो वर बोध जासको, केवल नाम कहाय ॥

समवशरण लहि बोधिधरम कहि, भव्य जीव सुख कन्द।

मोको भवसागरतें तारो, जय जय जय अभिनन्द ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पौष शु० १४, पुनर्वसु नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलम् ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घपर्यन्त ॥

अभिनन्दन जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दन जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

५. श्री सुमतिनाथ—सुकल चैत एकादशि हाने, घाति सकल जे युगपत जाने।

समवशरण महँ कहि वृष सारा, जजहुं अनन्त चतुष्टय धारा ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शु० ११, मघा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय. जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घपर्यन्त॥

सुमतिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री सुमति जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

६. श्री पद्मप्रभु—सुकल पूनम चैत सुहावनी, परम केवल सो दिन पावनी।
सुर सुरेश नरेश जजैं तहां, हम जजैं पद पंकज को यहां॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय चैत्र शु० १५, चित्रा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत॥

पद्मप्रभू जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। तप मङ्गल दिन हर्ष युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रींश्री पद्मप्रभू जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

७. श्रीसुपार्श्वनाथ—श्रमर फागुन छट्ट सुहावनं, परम केवल ज्ञान लहावनं।
समवशर्न विषै वृष भाखियो, हम जजैं पद आनँद चाखियो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ६, विशाखा नक्षत्रे, ज्ञानकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त॥

श्रीसुपार्श्व के चरण युग, अष्ट द्रव्य भरथार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

८. श्रीचन्द्रप्रभू—वर केवल भानु उद्योत कियो, तिहुं लोक तणो भ्रम मेट दियो।
कलि फाल्गुन सप्तमि इन्द्र जजें, हम पूजहिं सर्व कलंक भजें॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ०७, अनुराधा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घं पर्यन्त॥

चन्द्रप्रभू के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

९. श्रीपुष्पदन्त–सित कार्तिक गाये दोयज घाये, घाति करम परचंडा जी।
केवल परकाशे भ्रम तम नाशे, सकल सार सुख मंडा जी॥
गणराज अठासी आनँद भासी, समवशरण वृष दाता जी।
हरि पूजन आयो शीश नवायो, हम पूजैं जग ताता जी॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कार्तिक शु० २, मूल नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रींश्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय······संसारताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त॥

पुष्पदन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवंश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

१०. श्री शीतलनाथ–चतुर्दशी पौष बदी सुहायो, ताही दिना केवल लब्धि पायो।
शोभैं समौसृत्य बखानि धर्मं, चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्मं॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृ० १४ पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त॥

श्री शीतल जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थारं। ज्ञान दिवंश आनंद युत, पूजूं जिनपद सारं॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

११. श्री श्रेयांशनाथ—केवल ज्ञान सुजानन, माघ वदी पूर्ण तिथ को देवा।
चतुरानन भव भानन, वंदौं ध्यावों करों सुपद सेवा ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय माघ कृ० १५, श्रवण नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

श्रेयांश जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांशनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१२. श्री वासुपूज्य—सित माघहि दोयज सोहै, लहि केवल आतम जो है।
अन-अन्त गुणाकर स्वामी, नित बन्दौं त्रिभुवन नामी ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शु० २, शतभिषा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

वासुपूज्य जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१३. श्री विमलनाथ—विमल माघरसी हनि घातिया, विमल बोध लयो सब भासिया।
विमल अर्घ चढ़ाय जजौं अबै, विमल आनँद देहु हमैं सबै ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय माघ शु० ६, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे, ज्ञानकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

विमलनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१४. श्री अनन्तनाथ—असित चैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो तही।
लहि समोसृत धर्म धुरन्धरो, हम समर्चत विघ्न सबै हरो ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० १५, रेवती नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

श्री अनन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१५, श्री धर्मनाथ—पौष शुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भव तार।
गन सुर नरपति पूज्यो, पूजौं हो अवार, धरम जिनेश्वर पूजौं, पूजौं हो अवार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय पौष शु० १५, पुनर्वसु नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

धर्मनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१६. श्री शान्तिनाथ—शुकल पौष दशैं सुख राश है, परम केवल ज्ञान प्रकाश है।
भव समुद्र उतारन देव की, हम करैं नित मंगल सेवकी ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पौष शु० १०, भरणी नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय,जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

शान्तिनाथ के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पजूं जिनपद सार।
ॐ ह्रीं श्री शान्ति जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१७. श्री कुन्थनाथ–सुदी तिय चैत सुचेतन शक्त, चहूं अरि चय करि तादिन व्यक्त।
विराज समवसृत भाखि सुधर्म, जजौंपद कुंथ लहों पद पर्म ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल ३, कृत्तिका नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत।

कुंथनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१८. श्री अरहनाथ–कार्तिक सित द्वादशि अरि चूरे, केवल ज्ञान भयो गुण पूरे।
समवशरण थिति धरम बखाने, जजत चरण हम पातक भाने ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शु० १२, रेवती नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

अरहनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार।
ॐ ह्रीं श्री अरह जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१९. श्री मल्लिनाथ–पौष की श्याम दूजी हने घातिया, केवलज्ञान साम्राज्यलक्ष्म लिया।
धर्म चक्री भये सेव शक्री करैं, मैं जजों चर्ण ज्यों कर्म वक्री टरैं ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण २, पुष्य नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

मल्लिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ–वर केवलज्ञान उद्योत किया, नवमी वैशाख वदी सुखिया ।
घनि मोह निशा भनि मुक्ति मगा, हम पूजि चहैं भव सिंधु थगा ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृ०९, श्रवण नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

मुनिसुव्रत जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२१. श्री नमिनाथ–सित मगसिर ग्यारस चूरे, चव घाति भये गुण पूरे ।
समवसृत केवल धारी, तुमको नित नौति हमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मँगसिर शु० ११, अश्विनी नक्षत्रे, ज्ञानकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु, विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चंदनम् । इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

श्रीनमि जिन के चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । ज्ञान दिवश आनन्द युत पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नमि जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२२. श्री नेमनाथ–सित आश्विन एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे ।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं अष्ट प्रकारा ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अश्विन शु० १, चित्रा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय……संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

नेमिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । ज्ञान दिवश आनन्द युत पूजूं जिनपद सार ॥

ओं ह्रीं श्री नेमि जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२३. श्री पार्श्वनाथ—चैतकी चौथ श्यामा-महा भाविनी, तादिना घातिया घाति शोभावनी।
वाह्य आभ्यन्तरे छन्द लक्ष्मीधरा, जयति सर्वज्ञ मैं पाद सेवा करा ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० ४, विशाखा नक्षत्रे, ज्ञान कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

पार्श्वनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२४. श्री महावीर—शुकल दशैं वयशाख दिवश अरि, घात चतुक चय करना।
केवल लहि भवि भवसरतारे, जजों चरणसुख भरना।
मोहि राखो हो शरणा, श्रीवर्द्धमान जिनराय जी, मोहि राखो हो शरणा ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय वैशाख शु०१०, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे, ज्ञानकल्याणकाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

महावीर जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। ज्ञान दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

ज्ञान कल्याणक-जयमाल

(२४ मात्रिक छन्द दोहा)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुम गुण अन्त ॥ १ ॥

(१६ मात्रिक छन्द पद्धरि)

जय परम पूज्य तुम गुण महान । तुम पद को मैं नित धरौं ध्यान ।
जय चिदानन्द आनन्द कन्द । गुण वृन्द सुध्यावत मुनि अमन्द ॥ २ ॥
तुम जीवन के निज हेतु मित्त । तुम ही हो जग में जिन पवित्त ।
जय तप कर कर्म दिये खपाय । तुम मदन शत्रु दीने नशाय ॥ ३ ॥
जय पञ्च महाव्रत गज सवार । लै त्याग भाव दल बल सुलार ।
जय धीरज को दलपति बनाय । सत्ता छिति मह रण को मचाय ॥ ४ ॥
धरि रतन तीन तिहुं शक्ति हाथ । दश धर्म कवच तप टोप माथ ।
जय शुक्ल ध्यान कर खड्गधार । ललकारे आठौं अरि पुकार ॥ ५ ॥
तामें सब को पति मोह चंड । ताको तत्क्षण करि सहस खंड ।
फिर ज्ञान दरश प्रत्यूह धार । अरु अन्तराय दीनों पछार ॥ ६ ॥
रिपु शेष क्षय केवल उपाय । निज गुण गढ़ जीत्यो तुम जिनाय ।
शुचि ज्ञान दरश सुख वीर्यसार । इन आदि अनन्ते सुगुण धार ॥ ७ ॥
तहिं समवशरण रचना महान । जाके देखत सब पाप हान ।
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग । सब शोक तनो चूरै प्रसंग ॥ ८ ॥
सुर सुमन वृष्टि नभ,तैं सुहात । मनु मन्मथ तज हथियार जात ।
जहं चौंसठ चमर अमर दुरन्त । मनु सुजस मेघ झरि लगिय तंत ॥ ९ ॥
सिंहासन है जहँ कमल युक्त । मनु शिव सरवर को कमल शुक्त ।

दुंदुभि जिहिं बाजत मधुर सार। मनु करम जीत को है नगार ॥ १० ॥
सिर छत्र फिरैं त्रय श्वेत वर्ण। मनु रत्न तीन त्रय ताप हर्ण॥
तन प्रभातनों मंडल सुहात। भवि देखत निजभव सात सात ॥ ११ ॥
मनु दर्पण द्युति यह जग मगाय। भविजन भव मुख देखत सुआय।
इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीसत महिमा महान ॥ १२ ॥
ताको वरणत नहिं लहत पार। तो अन्तरंग को कहै सार।
तव समवशरण में इन्द्र आय। पद पूजत वसु विधि द्रव्य लाय ॥ १३ ॥
अति भगति सहित नाटक रचाय। ता थइ थइ थइ ध्वनि रही छाय ॥
पग नूपुर झननन झनन नाय। तन नन नन तननन तान गाय ॥ १४ ॥
घन नन नन नन घन्टा घनाय। छम छम छम छम घुंघरू बजाय।
दम दम दम दम दम मुरजध्वान। संसाग्रदि सारँगि भरत तान ॥ १५ ॥
झट झट झट अट पट नटत नाट। इत्यादि रच्यो अद्भुत सुठाठ।
पुनि वन्दि इन्द्र थुति नुति करन्त। तुम हो जग में जयवन्त सन्त ॥ १६ ॥
तुम भाखे सातों तत्व सार। जाको सुनि भव्य हिये विचार।
निज रूप लह्यो आनन्द कार। भ्रम दूर करन को अति उदार ॥ १७ ॥
पुनि नय प्रमाण निक्षेप सार। दरशायो करि संशय प्रहार।
इन को समस्त भाष्यो विशेष। जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश ॥ १८ ॥
निज ज्ञान हेतु ये मूल मंत्र। तुम भाषे श्री जिनवर सुतंत्र।

इम समवशरण में तत्व सार । उपदेश दियो है अति उदार ॥ १९ ॥
ताको जे भवि निज हेत चित्त । धारें ते पावें मोक्ष वित्त ।
मैं तुम मुख देखत आज पर्म । पायो निज आतम रूप धर्म ॥ २० ॥
मो कों अब भव भय तें निकार । निरभय पद दीजे परम सार ।
तुम सम मेरो जग में न कोय । तुमहीं तें सब विधि काज होय ॥ २१ ॥
तुम दया धुरन्धर धीर वीर । मेटो जग जन की सकल पीर ।
तातें मैं तुमरी शरण आय । यह विनति करत हों शीश नाय ॥ २२ ॥
भव बाधा मेरी मेट मेट । शिव राधा सों करि भेंट भेंट ।
जय भव भय भंजन कृत्य कृत्य । मैं तुमरो हूं निज भृत्य भृत्य ॥ २३ ॥
जय कुनय यामिनी सूर सूर । जय मन वांछित सुख पूर पूर ।
मम कर्म बन्ध दिढ़ चूर चूर । निज सम आनंद दे भूर भूर ॥ २४ ॥
अथवा जब लों शिव लहों नाहिं । तब लों ये तो नितही लहाहिं ।
भव भव कुल श्रावक जन्म सार । भव भव सतमत सतसंगधार ॥ २५ ॥
भव भव निज आतम तत्वज्ञान । भव भव तप संजम शील दान ।
भव भव अनुभव नित चिदानन्द । भव भव तुम आगम हे जिनन्द ॥ २६ ॥
भव भव समाधि युत मरण सार । भव भव व्रत चाहों अनागार ।
यह मो को हे करुणा निधान । सब जोग मिलै आगम प्रमान ॥ २७ ॥
जब लों शिव सम्पति लहों नाहिं । तब लों मैं इनको नित लहाहिं ।

यह अरज हिये अवधारिनाथ। भव संकट हरि कीजे सनाथ ॥ २८ ॥

(३२ मात्रिक छन्द घत्तानन्द)

जय दीन दयाला, वरगुनमाला, विरद विशाला सुख आला।
मैं पूजों ध्यावों शीश नमावों, देहु अचल पद की चाला ॥ २९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिन ज्ञानमंगलमंडिताय परमोत्कृष्ट पद प्राप्ताय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(२४ मात्रिक छन्द मदअविलिप्तकपोल)

जो चौवीस जिनेश जजैं है, मन वच काई। ताको होय अनन्द ज्ञान संपति सुख दाई।
पुत्र मित्र धन धान्य सुजस त्रिभुवन मँह छावै। सकल शत्रु नय जाँय अनुक्रम सों शिव पावै ॥ ३० ॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ चतुर्विंशतिजिन मोक्षकल्याणक पूजा।

१. श्री ऋषभनाथ—असित चौदशि माघ विराजई, परम मोक्ष सुमंगल साजई।
हरिसमूह जजे कयलास जी, हम जजैं अति धार हुलास जी ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय माघ कृ० १४, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे, मोक्षकल्याणकाय, जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम्। (इसी प्रकार ॐ ह्रीं से मोक्ष कल्याणकाय तक बोल बोल कर संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्, अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं, कामवाण विनाशनाय पुष्पं, क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं, मोह अन्धकार विनाशनाय दीपं, अष्टकर्म दहनाय धूपं, मोक्षफल प्राप्तये फलं, अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं, यह बोल बोल कर प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त चढ़ावें)।

श्री आदीश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

२. श्री अजितनाथ— पञ्चमि चैत्र सुदी निर्वाना, निज गुण राज लियो भगवाना।

इन्द्र फनिन्द्र जजे तित आई, हम पद पूजत हैं गुण गाई॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शु० ५, रोहिणी नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त॥

श्री अजितेश्वर चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री अजित जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

३. श्री संभवनाथ—चैत शुकल तिथि षष्टी ध.ख, गिरि समेद तैं लीनों मोख।

चार शतक धनु अवगाहना, जजों ताल पद थुति कर घना॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शु० ६, मृगशिरा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय······संसार तापविनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त॥

श्री संभव जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार॥

ॐ ह्रीं श्री संभव जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

४. श्री अभिनन्दननाथ—जोग निरोध अघाति घाति लहि, गिरि समेदतैं मोख।

मास सकल सुख राश कहे, वैशाख शुकल छठ चोख॥

चतुरनिकाय आय तित कीनो, भक्त भाव उमगाय।

हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि, विघन सघन मिट जाय ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय वैशाख शु० ६, पुनर्वसु नक्षत्रे, मोक्षकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यन्त ॥

अभिनन्दन जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

५. श्री सुमतिनाथ–चैत सुकल ग्यारस निर्वानं, गिरि समेद तैं त्रिभुवन मानं।

गुण अनन्त निज निर्मल धारी, जजों देव सुधि लेहुहमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शु० ११, मघा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

सुमतिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनद युन, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

६. श्री पद्मप्रभु–असित फागुन चौथ सुजानियो, सकल कर्म महा रिपु हानियो।

गिरि समेद थकी शिव को गये, हम जजैं पद ध्यान विषैं लये ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ४, चित्रा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि अर्घ पर्यंत ॥

पद्मप्रभू जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभू जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

७. श्री सुपार्श्वनाथ–असित फाल्गुन सातय पावनं, सकल कर्म किये क्षय भावनं।

गिरिसमेद शिखर तें शिव गये, जजत मन वच तन हम शिर नये ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फागुन कृ० ७, विशाखा नक्षत्रे, मोक्षकल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

श्रीसुपार्श्व जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्व जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

८. श्री चन्द्रप्रभु—वदि फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये, गुणवन्त अनन्त अबाध भये।
हरि आय जजें तित मोद धरे, हम पूजत ही सब पाप हरे ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय फाल्गुन कृ० ७, अनुराधा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय······संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

चन्द्रप्रभू जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

९. श्री पुष्पदन्त—भादव सित सारा आठैंधारा, गिरि समेद निर्वाना जी।
गुण अष्ट प्रकारा अनुपम धारा, जैजै कृपा निधाना जी ॥
तित इन्द्र सु आयो पूज रचायो, चिह्न तहां करि दीना है।
मैं पूजत हों गुण ध्याय मही सो, तुमरे रस में भीना है ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भादों शु० ८, मूल नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय····· संसारताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

पुष्पदन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१०. श्री शीतलनाथ–कुंवार की आठय शुद्ध बुद्धा, भये महा मोक्ष स्वरूप शुद्धा ।
समेद तैं शीतलनाथ स्वामी, गुणाकरं तासु पदं नमामी ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शु० ८, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

श्री शीतल जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

११. श्री श्रेयांशनाथ–गिरि समेद तैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावन को ।
कुलिशायुध गुन गायो, मैं पूजौं आप निकट आवन को ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयाँशनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शु० १५, श्रवण नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय. जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयाँशनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घपर्यन्त ॥

श्रेयाँश जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयाँश जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१२. श्री वासुपूज्य–सित भादव चौदशि लीनों, निरवान सुथान प्रवीनों ।
पुर चम्पा थानक सेती, हम पूजत निज हित हेती ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भादव शु० १४, शतभिषा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घपर्यन्त ॥

वासुपूज्य जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१३. श्री विमलनाथ—भूमर साढ़ अठी अति पावनी, विमल मुक्ति लई मन भावनी।
गिर समेद हरी नित पूजियो, हम जजें इत हर्ष धरैं हियो ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ कृ० ८, उत्तराफल्गुनी नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घपर्यन्त ॥

विमलनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री विमल जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१४. श्री अनन्तनाथ—असित चैत्र अमावस गाइयो, अघत घाति हने शिव पाइयो।
गिरि समेद जजें हरि आयके, हम जजैं पद प्रीति लगाइके ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० १५, रेवती नक्षत्रे, मोक्ष कल्याण काय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

श्री अनन्त जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्त जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१५. श्री धर्मनाथ—जेठ शुकल तिथि चौथ की हो, शिव समेद तैं पाय।
जगत पूज्यपद पूजों, पूजों हो अबार। धरम जिनेश्वर पूजों, ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ शु० ४, पुनर्वसु नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

धर्मनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१६. श्रीशान्तिनाथ—असित चौदश जेठ हनें अरी, गिरि समेद थकी शिवतिय वरी ।
सकल इन्द्र जजे तित आयकै, हम जजैं इत मस्तक नायकै ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृ० १४, भरणी नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय......संसार तापविनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

शांतिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१७. श्री कुंथनाथ—सुदी वैशाख सु एकम नाम, लियो तिहिं द्यौस अभै शिवधाम ।
जजे हरि हर्षित मंगल गाय, समर्चतु हों सु मनो वच काय ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय वैशाख शु० १. कृत्तिका नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् ।
ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय ......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

कुंथनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१८. श्री अरहनाथ—चैत अमावस्या सब कर्म, नाशि वास किये शिवथल पर्म ।
निश्चल गुण अनन्त भंडारी, जजों देव सुध लेहु हमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० १५, रेवती नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

अरहनाथ जिनचरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री अरह जिनपदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

१९. श्री मल्लिनाथ–फाल्गुनी सेत पाँचे अघाती हते, सिद्धआलय बसे जाय सम्मेद तें ।
इन्द्र नागेन्द्र कीन्ही क्रिया आयके, मैं जजों सो मही ध्यायके गायके ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय फागुन शु० ५, अश्विनी नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

मल्लिनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भरथार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्दपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२०. श्री मुनिसुव्रत–वदि बारस फागुन मोक्ष गये, तिहुंलोक शिरोमणि सिद्ध भये ।
सु अनन्त गुणाकर विघ्न हरी, हम पूजत हैं मन मोद भरी ॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय फागुन वदि १२, श्रवण नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

मुनिसुव्रत जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिन पदाग्रे पूर्णानंद पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२१. श्री नमिनाथ–वैशाख चतुर्दशि श्यामा, हनि शेष वरी शिव-वामा ।
सम्मेद थकी भगवन्ता, हम पूजें सुगुण अनन्ता ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृ० १४, अश्विनी नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् । इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

श्री नमि जिन के चरण युग, अष्ट द्रव्य भरथार । मुक्ति दिवश आनन्द युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२२. श्री नेमिनाथ—सित साढ़ अष्टमी चूरे, चारों अघातिया क्रूरे ।
शिव उर्ज्जयंत तें पाई, हम पूजैं ध्यान लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ शु० ८, चित्रा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय......संसारताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

नेमनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री नेम जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२३. श्री पार्श्वनाथ—सप्तमी शुद्ध शोभै महा सावनी, तादिना मोक्ष पायो महा पावनी ।
शैल सम्मेद तैं सिद्ध राजा भये, आप को पूजते सिद्ध काजा ठयें ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शु० ७, विशाखा नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यन्त ॥

पार्श्वनाथ जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

२४. श्री महावीर—कार्त्तिक श्याम अमावस शिव तिय, पावापुर तें परना ।
गण फणि वृन्द जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भय हरना। मोहि राखो
हो, शरना। श्री वर्द्धमान जिन रायजी, मोहि राखो हो शरना ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कार्तिक कृ ३०, स्वाति नक्षत्रे, मोक्ष कल्याणकाय, जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय......संसार ताप विनाशनाय चन्दनम्। इत्यादि प्रत्येक द्रव्य अर्घ पर्यंत ॥

महावीर जिन चरण युग, अष्ट द्रव्य भर थार। मुक्ति दिवश आनंद युत, पूजूं जिनपद सार ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिन पदाग्रे पूर्णानन्द पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मोक्षकल्याणक-जयमाल।

(२४ मात्रिक छन्द दोहा)

अष्ट दुष्ट को नष्ट कर, इष्ट मिष्ट निज पाय।
शिष्ट धर्म भाष्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय ॥१॥

(१६ मात्रिक छन्द पद्धरि)

जय जय जय जय तुम गुण गँभीर। तुम आगम निपुन पुनीत धीर ॥ जय जय जय कुमुदानन्द चन्द। जय जय भवि पङ्कज को दिनंद ॥२॥ जय जय शिव तिय वल्लभ महेश। जय ब्रह्म शिवशंकर गणेश ॥ जय शिव तिय मुख पङ्कज दिनेश। नहिं रह्यो सृष्टि में तम अशेश ॥ ३ ॥ नव केवल लब्धि विराजमान। जय तेरम गुण थिति गुण अमान ॥ गुण चौदह में द्वै भाग तत्र। जय कीन्ह बहत्तर तेरहत्र ॥ ४ ॥
वेदनी असाता को विनाश। औदारि विक्रियाहार नाश ॥ तैजस्य कारमाणहिं मिलाय ॥
तन पञ्च पञ्च बंधन विलाय ॥ ५ ॥ संघात पञ्च घाते महंत। त्रय आँगोपांग सहित भनंत।
संठान संहनन छह छहंत। रस वरण पञ्च वसुफरस भेव ॥६॥ जुग गंध देवगति सहित पुव्व ॥
पुनि अगुरु लघू उस्वास दुव्व ॥ पर उपघातक सु विहाय नाम। जुत अशुभ गमन प्रत्येक खाम ॥७॥
आरज थिर अथिर अशुभ सुभेव ॥ दुरभाग सुसुर दुस्सुर अभेव ॥ अनआदर और अजस्य कित्त।
निरमाण नीच गोतौ विचित्त ॥ ८ ॥ ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय। तब दूजे में तेरह नशाय ॥
पहले साता वेदनी जाय। नर आयु मनुष गति को नशाय ॥९॥ मानुष गत्यानुपूर्वी सुर्वीय।

पञ्चेन्द्रिय जात प्रकृति विधीय ॥ त्रस, बादर पर्यापत सुभाग । आदर जुत उत्तम गोत्र पाग ॥ १० ॥
यश कीरत तीरथ प्रकृति जुक्त । ये तेरह क्षय करि भये मुक्त ॥ शिवपुर पहुंचे तुम हे जिनेश ।
गुण मण्डित अतुल अनन्त भेश ॥११॥ इंद्रादि देव आये तुरंत । शिवमंगल कर निज थल गमंत ॥
सम्मेद शिखर कैलाश सार । चम्पा अरु गिरनारी पहार ॥१२॥ पावापुर युत पच मुक्ति थान ।
मन वच तन जुत जुग जोड़ पान ॥ मैं ध्यावत हौं नित शीश नाय । हमरी भव बाधा हरि जिनाय ॥१३॥
जय बुद्धि चिदाम्बर विष्णु ईश । जय रमाकांत शिव लोक शीश ॥ जय गुण अनंत अविकार धार ।
वर्णित गणधर नहिं लहत पार ॥१४॥ जय स्वच्छ चिदङ्ग अनङ्ग जीत । तुम ध्यावत मुनिगण सुहृद मीत ॥
जय जगजन मनरंजन महान । जय भवसागर में सुष्ठु यान ॥१५॥ प्रभु अशरण शरण अधार धार ।
मम विघ्न तूल गिरि जार जार ॥ मैं शरणागत आयो अबार । हे कृपासिंधु गुण अमल धार ॥१६॥
तुम करुणा सागर सृष्टि पाल । अब मोकों वेग करो निहाल ॥ तुमको जग में जान्यो दयाल ।
हो वीतराग गुण रत्न माल ॥ १७ ॥ तातैं शरणा अब गही आय । प्रभु करो वेग मेरी सहाय ॥
यह विघ्न करम मम खंड खंड । मन वाँछित कारज मंड मंड । १८ ॥ संसार कष्ट चकचूर चूर ।
सहजानंद मम उर पूर पूर ॥ निज पर प्रकाश बुधि देहु देहु तजि कै विलम्ब सुधि लेहु लेहु ॥ १९ ॥
हम जाचत हैं यह बार बार ॥ भवसागर तें दिहु तार तार । सेवक अपनो निज जान जान ।
करुणा कर भव भय भान भान ॥ २० ॥ सब विघ्न मूल तरु खंड खंड । चित चिन्तत आनँद मंड मंड ॥
मै दुख अनंत वसु कर्म जोग । भोगे सदीव नहीं और रोग ॥ २१ ॥ यह सह्यो जात नहिं जगत दुःख ।
तातें विनवों हों सुगुण मुक्ख ॥ मो मन में तिष्ठिहु सदा काल । जब लौं न लहों शिवपुर रसाल ॥२२॥

(३२ मात्रिक छन्द घत्तानन्द)

जय जय सुख सागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर पार्श्वपती ॥
"वृन्दावन" ध्यावत पूज रचावत, शिव थल पावत, शर्म अती ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति जिन मोक्षमंगल मंडिताय परमोत्कृष्टपद प्राप्ताय परमार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(३१ मात्रिक छन्द कवित्त)

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, दारिद्र गिरि को वज्र समान ॥
सुखसागर वर्द्धन को शशिसम, दव कषाय को मेघ महान ॥
तिनको पूजै जो भवि प्राणी, पाठ पढ़ै अति आनँद आन ॥
सो पावै मन वांछित सुख सब, और लहै अनुक्रम निर्वान ॥२४॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ समुच्चय जिन चतुर्विंशति पूजा।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन। सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांश नमि। वासुपूज्य पूजित सुरराय ॥
विमल अनन्त धरम जस उज्ज्वल। शान्ति कुन्थ अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु। वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्विंशति जिन समूह अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ॥ अह्वाननं ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ स्थापनं ॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति जिन समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ सन्निधिकरणं ॥

अष्टक ।

मुनि मन सम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा ।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनों धार धरा ॥
चौवीसों श्रीजिन चन्द, आनँद कंद सही ।
पद जजत हरत भव फन्द, पावत मोक्ष मही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गोक्षीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी ।
जिन चरणन देत चढ़ाय, भव आताप हरी ॥ चौ० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो भव ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

तंदुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे ।
मुक्ताफलकी उन्मान, पुंज धरों प्यारे ॥ चौ० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥

वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरौं गुणमंड, काम कलंक हरे ॥ चौ० ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो काम बाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

मन मोदक मोदक आदि, सुंदर सद्य बने ।
रस पूरित प्राशुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तम खंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञान कला जागे ॥ चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दश गंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हौं ।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुम पद सेवत हौं ॥ चौ० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृग मन को प्यार, पूजत सुख पायो ॥ चौ० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

जल फल आठों शुचिसार, ताको अरघ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥ चौ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला ।

दोहा—श्री मत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित हेत ।
गावों गुण माला अबै, अजर अमर पददेत ॥ १ ॥

छन्द घत्तानन्द

जय भव तम भंजन जनमन कंजन, रंजन दिन मन स्वच्छ करा ।

शिव मग परकाशक अरिगण नाशक, चौबीसों जिन राज वरा ॥ २ ॥

छन्द पद्धरि

जय ऋषभ देव ऋषिगण नमन्त । जय अजित जीत वसु अरि तुरंत । जय संभव भवभय करत चूर ।
जय अभिनंदन आनंद पूर ॥ ३ ॥ जय सुमति सुमति दायक दयाल । जय पद्म पद्म द्युति तन रसाल ।
जय जय सुपार्श्व भव पाश नाश । जय चंद चंद तन द्युति प्रकाश ॥ ४ ॥ जय पुष्पदंत द्युति दंत सेत ।
जय शीतल शीतल गुण निकेत । जय श्रेयनाथ नुत सहस भुञ्ज । जय वासव पूजित वासुपुज्ज ॥५॥
जय विमल विमल पद देनहार । जय जय अनन्त गुणगण अपार ॥ जय धर्म धर्म शिव शर्म देत ।
जय शान्ति शान्ति पुष्टी करेत ॥६॥ जय कुंथ कुंथवादिक रखेय । जय अर जिन वसु अरि क्षय करेय ॥
जय मल्लि मल्ल हत मोह मल्ल । जय मुनिसुव्रत व्रत सल्ल दल्ल ॥७॥ जय नमि नित वासव नुत सपेम ।
जय नेमनाथ वृषचक्र नेम ॥ जय पारसनाथ अनाथ नाथ । जय वर्द्धमान शिव नगर साथ ॥८॥

घत्तानन्द ।

चौबीस जिनिन्दा आनन्द कंदा । पाप निकंदा सुखकारी ॥
तिनपद जुग चन्दा उदय अमंदा । वासव वंदा हितधारी ॥९॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
सोरठा– भुक्ति मुक्ति दातार, चौवीसों जिन राज वर ।
तिन पद मन वच धार, जो पूजै सो शिव लहै ॥
इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कविवर वृन्दावन जी की
जन्म कुंडली

शुभ मिती माघ शुदी १४ विक्रम सं० १८४८, सोमवार,
पुष्य-नक्षत्र, कन्या लग्न, मकर सूर्य अंश २७

जन्म लग्नम्

इति शुभम् ।

स्वल्पार्घ ज्ञानरत्नमाला

इस माला के प्रत्येक रत्न का स्वल्प मूल्य रखना इसका मुख्य उद्देश्य है॥
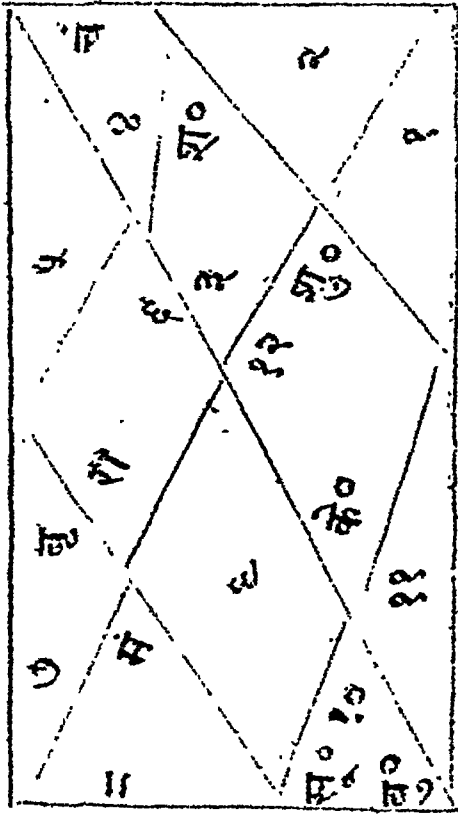
(१) इस माला के प्रत्येक रत्न का स्वल्प मूल्य रखना इसका मुख्य उद्देश्य है ॥

(२) जो महाशय ॥=) शुल्क (प्रवेश फीस) जमा कराकर माला के सर्व ग्रन्थरत्नों के या १) जमा कराकर अभीष्ट

(मनचाहे) ग्रन्थरत्नों के स्थायी ग्राहक बन जाते हैं उन्हें माला का प्रत्येक ग्रन्थरत्न पौने मूल्य में ही अर्थात् ।) प्रति

रुपया कमीशन काट कर दे दिया जाता है ॥

(३) ज्ञान दानोत्साही महानुभावों को धर्मार्थ बांटने के लिये किसी ग्रन्थ- रत्नकी अधिक प्रतियां लेने पर लगभग

लागत मूल्य पर या लागत से भी कम मूल्य पर बहुत कम निछावर में अर्थात् कम से कम १० प्रति लेने पर ।-), ५५

प्रति लेने पर ।=),१०० पर ।≡) और २५० पर ॥) प्रति रुपया कमीशन काटकर दे दिये जाते हैं ॥

(४) माला में प्रकाशित हुए या होने वाले ग्रन्थरत्नों के नाम, उनका सविस्तर विषय और माला के विशेष

नियमादि दो पैसे का टिकट डाक महसूल के लिये आने पर या सूचना मिलने पर बैरिंग डाक से भेजे जा सकते हैं ॥

अन्यान्य ग्रन्थ आदि (माला के ग्राहकों को यह भी पौने मूल्य में)

(१) उपयोगी नियम [हिंदी]—गृहस्थ धर्म सम्बन्धी ५७ क्रिया तथा धार्मिक, नैतिक और वैद्यक शिक्षा सम्बंधी

५७ सर्व साधारणोपयोगी एवं दम कंठाग्र रखने योग्य चुने हुए नियमों का शीट, शीशे चोखटे में जड़वा कर बैठक के

कमरे में लटकाने लायक, कीमत)॥।

(२, ३) जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मतियां (हिन्दी) भाग १, २, मू०)॥।, =)।

(४) महापुराणके आधारपर तईयार किया हुआ २४ जैन तीर्थंकरोंके पञ्चकल्याणकों की शुद्ध तिथियों का नक्शा

सहित शुद्ध तिथि कोष्ठ (तिथिक्रम से, हिन्दी)—शीशे चौखटे में लगवाकर लटकाने योग्य शीट, मूल्य =)

(५) अग्रवाल इतिहास (हिन्दी)—सूर्यवंशकी एक शाखा अग्रवंश का ७००० वर्ष पूर्वसे आजतक का प्रमाणीक जैन अजैन

प्राचीन व अर्वाचीन ग्रन्थों व पट्टावलियां आदि के आधार पर बड़ी खोज के साथ लिखा गया शिक्षाप्रद इतिहास, मू० ≡)

ऐस० सी० जैन (बुलन्दशहरी), बाराबंकी (अवध)